अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सौर भाद्र , १५ शक १८७९ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति २ आना

वर्ष-३, अंक-४९ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, ६ सितम्बर, '५७

जनता और सरकार की मर्यादाएँ !

सरकार अस्पताल खोलती है, उसका हमको निषेध नहीं। कॉलेज खोलती है, उसका निषेध नहीं। जब तक जरूरत है, तब तक सैन्य रखती है, उसका भी निषेध नहीं! लेकिन हम इतना ही कहना चाहते हैं कि निर्भयता की जगह सेना नहीं ले सकती। कारुण्य की जगह अस्पताल नहीं ले सकता और ज्ञान-तृष्णा की जगह कॉलेज नहीं ले सकता! निर्भयता-गुण देश में होगा, तभी देश की रक्षा होगी, केवल सेना बढ़ाने से नहीं! ज्ञान-तृष्णा से देश में ज्ञान बढ़ेगा, केवल कॉलेज, यूनिवर्सिटियाँ बढ़ाने से नहीं! कारुण्य-गुण बढ़ने से देश की उन्नति होगी, सरकारी पैसों से अस्पताल खोलने से ही नहीं। इस वास्ते सरकार पर काम सौंप देने से अपनी उन्नति नहीं होगी। इतना आसान काम वह है भी नहीं!

मंगलूर, २५-८-'५७ —विनोबा

सन् '५७ की यह भू-जयंती !

(बाबा राघवदास)

पूज्य बापूजी अपने जन्मदिन को चरखा-द्वादशी कहते थे। पर विनोबाजी के जन्म-दिवस, ११ सितम्बर को 'भूजयन्ती' कहने की परिपाटी भूदान के लिए उनकी कठोर साधना के कारण हमने डाली और 'भू-जयन्ती' कहना लोगों ने शुरू किया। उसकी प्रतिष्ठा भी हमें सतत बनाये रखनी है।

प्रथम भूदान, द्वितीय छठवाँ हिस्सा, तृतीय सम्पत्तिदान, चौथा जीवनदान, पाँचवाँ ग्रामदान और अब शान्ति-सेना, इस प्रकार इस पर्वत-माला के शिखर-दर्शन हम कर रहे हैं। भगीरथ की तरह गंगा को पर्वत से बाहर लाने का यह महत् प्रयास चल रहा है। विनोबाजी कह रहे हैं कि उनका भौतिक शरीर क्षीण हो रहा है, पर अंतर-शक्ति, चिन्तन-शक्ति बढ़ रही है! अभी-अभी उन्होंने कहा था कि अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह के भीतर अपने चन्द साथियों के साथ काम कर रहा हूँ! हमसे उन्होंने प्रश्न किया है कि इस जीवन-संघर्ष में हम-आप तमाशबीन होकर खड़े रहेंगे या प्रत्यक्ष भाग लेंगे? यह उनका नहीं, युग का प्रश्न है। इसीका उत्तर हमें इस '५७ में, चार मास के भीतर देना है।

इतिहास पढ़ना अलग बात है, पर इतिहास निर्माण करना और ही चीज है। इसके लिए साहस चाहिये, बलिदान चाहिये और चाहिये सातत्य। श्री विनोबाजी का यह प्रश्न हमें आत्मपरीक्षण के लिए विवश कर रहा है। भारत के उत्साही, सेवा-वृत्तिवान् और गरीबों से संबंध रखने वालों के लिए यह प्रश्न सीधी चुनौती है।

भगवान् हमें बल दे कि इस पावन ऐतिहासिक आवाहन का उत्तर उसी शान के साथ देकर हम भारत माँ का मुख उज्ज्वल कर सकें, भूजयन्ती को सही माने में प्रमाणित कर सकें।

कालड़ी-सम्मेलन के महामन्त्र हैं : सन् ५७ में हो स्वराज! एक दिन में हो स्वराज! गाँव की खेती, गाँव का राज!! ५७ में हो स्वराज!!! जय भू-जयन्ती!

सन् '५७ के प्रति मेरी श्रद्धा !

(रविशंकर महाराज)

अपने जीवन में मैं सदा किसी-न-किसी महात्मा का संदेश घर-घर पहुँचाने का ही काम करता आया हूँ। सरदारश्री और बापू के संदेशों को फैलाने का काम पहले करता था, अब विनोबाजी का भूदान-संदेश फैला रहा हूँ। यह संदेश क्या है?

उसका पहला तत्त्व यह है कि सच्चा धन या मिल्कियत तो अनाज है। इसलिए जमीन या पैसों को कोई भी मिल्कियत बनने ही न दें। भूमि तो ईश्वर-प्रदत्त एक साधन है, यह समझ कर सबके साथ मिल-जुल कर उस पर हम सब काम करें, फसल उगायें और सब मिल कर साथ-साथ जीयें।

हम मानव-द्रोही न बनें

दूसरा तत्त्व यह है कि कोई पैसे के लोभ में न फँसें। जमीन में जो काश्त उगानी है, वह सही जरूरतों को पूरी करने के लिए ही उगायें। आज लोग जमीन से, अनाज उगाने के बदले, पैसा देने वाली फसलें उगाते हैं! यह धरती माता के प्रति, साथ ही मनुष्य-जाति के भी प्रति द्रोह है!

शरीरश्रम भी नित्य-धर्म बने

तीसरी बात यह है कि हर शख्स, चाहे वह उम्र में छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या धनी, हरएक को रोज शरीरश्रम करने का धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए। अपने लिए दूसरों से मेहनत कराना और खुद आरामतलब बनना, यह ईश्वर की योजना के ही विरुद्ध है। हमारे समाज में जो सड़ांध पैदा हो रही है, उसकी जड़ें इस श्रम-त्याग में ही निहित हैं।

भूदान का यह सार अगर हम समझ लें, तो सन् '५७ के पवित्र साल में ही विनोबाजी के रामराज्य का सपना हम सिद्ध कर सकेंगे, ऐसी मेरी श्रद्धा है!

लोक-युग का नया चरण !

(स्व० डॉ० सुधीन्द्र)

हुआ एक युग का चरण आज पूरा, चरण अब नये लोक-युग का उठायें।

हुआ हो सवेरा, मिटा हो अंधेरा, घने बादलों ने हमें किन्तु घेरा!
उठे उग्र तूफान, आंधी भयंकर, युगों से जले दीप घर के बचायें।
हुआ एक युग का चरण आज पूरा, चरण अब नये लोक-युग का उठायें!!

बँटा खण्ड में छिन्न-विच्छिन्न जीवन, खिन्न तन-मन,
विविध वर्ण की, वर्ग की, जातियों की, विविध धर्म की भीतियां ये गिरायें।
हुआ एक युग का चरण आज पूरा, चरण अब नये लोक-युग का उठायें!!

करें काम हम फल मिले शुद्ध श्रम का, मिटें भिन्नताएं, जगे भाव सम का,
न हो सर्वहारी, न हो सर्वहारा, सुखद साम्य सर्वोदयों में मिलायें।
हुआ एक युग का चरण आज पूरा, चरण अब नये लोक-युग का उठायें!!

www.vinoba.in

असली शांति और शांति-सेना की जरूरत

(विनोबा)

पूछा जाता हैं कि केरल में शांति-सेना कायम हो रही है, तो क्या वहाँ बहुत अशांति है ? हाँ, भयानक अशांति है, क्योंकि वह दीखती नहीं ! दीखने वाली अशांति भयानक नहीं होती । प्रत्यक्ष बुखार से पेट का अप्रत्यक्ष रोग अधिक भयानक होता है । हिंदुस्तान में ही दरअसल आज 'शांति' नहीं है । पीस (peace) भर है, जो बिल्कुल कीमती चीज नहीं है । अंग्रेजी के 'वार' और 'पीस' इंटरचेंजेबल टर्म्स (परिवर्तनशील शब्द-प्रयोग) हैं । जैसे मिट्टी का रूपांतर घड़े में और घड़े का मिट्टी में होता है, वैसे आज अंग्रेजी 'पीस' और 'वार' एक-दूसरे को पैदा करते हैं ! जैसे रजो-तमोगुण एक-दूसरे की संतान हैं और परस्पर की प्रतिक्रया में से पैदा होते हैं, वैसे ही ये 'पीस' और 'वार' परस्पर के जन्य-जनक हैं । ऐसी 'पीस' में छोटी दृष्टि वाले राजनीतिज्ञों को संतोष होता है । वे सोचते हैं, अभी तो 'पीस' रहे और 'वार' को हम आगे ढकेलते जायँ, इसलिए 'हॉट वार' (गरम-युद्ध), और 'कोल्ड वार' (शीत युद्ध) शब्द निकले ! जैसे 'कोल्ड वार' होता है, वैसे 'हॉट पीस' भी तो होती है ! इसलिए ऐसी 'पीस' में कोई सार नहीं । 'शांति' अलग चीज है, इसलिए शांति-सेना 'समतोल' समाज की स्थापना करेगी, जैसे शरीर में 'धातुसमत्व' आरोग्य के लिए आवश्यक माना जाता है । धातु याने धारण करने वाले तत्त्व, जो अनेक होते हैं, जैसे श्रमधातु, धनधातु, बुद्धिधातु । इनमें साम्य स्थापित करने का अर्थ है शांति । आज समाज में तो सामाजिक विषमता है, फिर भी कहते हैं, 'पीस' है ! मतलब इतना ही है कि वह 'वार' में परिणत नहीं हुई है ! याने आग लगने लायक घटना नहीं हुई ! धूआँ है । ज्वाला के प्रकट होने पर 'वार' पैदा होगी ! लेकिन हम न ज्वाला चाहते हैं, न धूआँ । केरल में विविध समाज हैं, जन-संख्या भी बहुत है, पार्टियाँ भी बहुत हैं, याने सारी बारूद यहाँ तैयार है । आग लगना ही बाकी है ! इसलिए शांति-सेना की यहाँ ज्यादा जरूरत है । उसके जरिये संतुलित समाज यहाँ बनाना है ।

शांति-सेना याने मौजूदा समाज कायम रख कर, बीच-बीच में उठने वाले झगड़े मिटाने की ही बात नहीं है । दुनिया में यही तो चल रहा है साम, दाम, दंड, भेद के रूप में । यदि भूदान-आंदोलन में भी 'दान' याने मौजूदा समाजव्यवस्था कायम रखने के लिए चंद लोगों को दी गयी रिश्वत ही बन जाय और शांति-सेना याने शस्त्र-सेना की पूर्वतैयारी ही हो, तो इसमें से कोई तथ्य नहीं निकलेगा ।

समाजसेवक पक्षमुक्त, निस्पृह, सत्यनिष्ठ और किसी की भी गलती को बदलने की हिम्मत रखने वाला होना चाहिए । ऐसा होना पार्टी-मेंबर के लिए संभव नहीं है, क्योंकि वह पार्टी के अनुशासन से बँधा हुआ होता है ! सर्वोदय-समाज का सदस्य तो पक्षमुक्त ही नहीं, पक्ष को तोड़ने वाला होगा ! पर उसका आधार विचार-प्रचार और निज का आचार ही होगा । पार्टियाँ तो टूटेंगी ही, क्योंकि दुनिया की वह बुनियाद ही, जिस पर कि दुनिया खड़ी है, ढीली हो गयी है !

लोग कहते हैं, "इधर आप काम कर रहे हैं, लेकिन सरकार के नये-नये कानून उधर बनते ही जा रहे हैं, फिर भी आप उदासीन कैसे ?" महाभारत में इसका जवाब दिया है गया कि भीम चावल खा रहा था और बकासुर उसे पीट रहा था । भीम चुपचाप खाता रहा, पर बाद में उसने बकासुर को खतम किया । यदि खाना छोड़ कर वह उसके पीछे लगता, तो लाभ नहीं होता ! इसलिए हमको अपना काम जारी रख कर उनके मुकाबले हिम्मत से, उसे कसरत समझ कर सहन करने चाहिए !

विनोबाजी चिरायु हों !

(अनुष्टुप)

रंग औ' रूप के भेद भाषा-भेद अनेक हैं ।
वर्ण-पंथ प्रदेशों के भेदों का अतिरेक है ॥
उचता-नीचता आयी आपसी व्यवहार में ।
गरीबी औ' अमीराई मानवी-समुदाय में ॥
मानवोत्पन्न भेदों ने मनुष्य को अटका रखा ।
भेद-कंटक शय्या पे कराह मानवी रहा ॥
आपसी द्वेष-ईर्ष्या से करुणा भूलता गया ।
भेदासुर-प्रपंचों से दैत्य-सा बनता गया ॥
काटता भाई को भाई, ध्वंस में रममाण है ।
आप्त के नाश में आप्त सदैव क्रियमाण है ॥
समता, स्नेह, सौहार्द भूला, वह धर्म का पथ ।
अंधा वह बन बैठा है लगाता अपनी रट ॥
भ्रांत ऐसे जनों में यह घूमता परिव्राजक ।
दम, दान, दया मंत्र सुनाता उपनिषद् ॥
बताता जीवनादर्श कराता त्याग-स्वार्पण ।
दृष्टि दिव्य अनोखी से सर्वत्र ईशदर्शन ॥
ध्वांत को चीरता आगे बढ़ा जाता मशालची ।
क्लांत को शांति देता वह गाता साम-सुरावलि ॥
अमी का स्रोत ले आया सत्य का सरिताजल ।
धर्म औ' न्याय-गंगा में कराता मन निर्मल ॥
भक्त वह कर्मयोगी वह ज्ञानयोगी मुनिवर ।
प्रज्ञावान विनोबा भूमिक्रांति-प्रवर्तक ॥
व्रतस्थ वीतरागी वह अहिंसा-सत्य साधक ।
साम्ययोगी च संन्यासी गीता का अनुगायक ॥
आर्षद्रष्टा अनासक्त सर्वकल्याणचिंतक ।
तपोमूर्ति **विनोबाजी शतायु हो निरामयः** ॥
चिरायु हो विनायक ।

—गोकुलभाई भट्ट

मोर्चे के सैनिकों से भी !

रचनात्मक कार्यकर्ता सर्वोदय-समाज के मोर्चे के सैनिक हैं ! वे अगर सेना का अनुशासन नहीं पालते हैं और पीछे के साथियों के साथ भी नहीं जुड़े रहते हैं, तब वे शत्रु के साथ हो जाते हैं, क्योंकि वे आगे हैं । इसलिए शांति-सेना के साथ उनको अपना संबंध बनाये रखना चाहिए, जैसे मोर्चे की सेना का संबंध पिछली सेना के साथ रहता है । मिसाल के तौर पर, शत्रु के खिलाफ हमने अंबर चरखा भेज दिया ! तो अब उसका एक हाथ हमको पकड़ रखना चाहिए । याने रचनात्मक कार्यकर्ता विचार को समझें और आंदोलन से जुड़े रहें, क्योंकि वे अग्रसर हैं, सामने मोह बहुत हैं और शत्रु सामने वाले को ही पहले फोड़ता है ! देखते-देखते रचनात्मक कार्यकर्ता सरकारमय हो सकते हैं । सोचते हैं, अपनी ही तो सरकार है, वह नरक में नहीं ले जायगी, वह अपना ही तो भला चाहती है, आदि । लेकिन खतरा तो नरक का नहीं, स्वर्ग का है ! अतः देखते-देखते खादी, ग्रामोद्योग आदि सब सरकारी हो सकते हैं । कल्याण-राज्य में यही तो होता है ! इसलिए इस भेद को हम समझ लें, तभी हमारी ताकत बढ़ेगी ।

सर्वोदय-मंडल भी गाँव-गाँव में बनने चाहिए और लोकसेवकों की संख्या भी बढ़नी चाहिए । थोड़े से काम में संतोष करेंगे, या उसीकी चिंता में हम लग जायेंगे तो सारा काम खत्म भी हो सकता है, क्योंकि नये-नये विचारों को हजम कर जाने की ताकत भारत के समाज में है ! वे कहेंगे, ठीक है; कुछ तो काम हो गया, कुछ तो ग्रामदान हो गया, कुछ कानून भी बना, आदि ! फिर बात वहीं रुक जाती है ! जैसे बड़े लोग अपने घर में कुछ सुधार करते हैं, तो समाज अपवाद के तौर पर उसे मान ही लेता है न ? वह कहता है :"तेजीयतां न दोषायः", समरथ को नहिं दोष गुसाईं ! लेकिन दूसरों को तो दोष लगता है ! याने उसको वे व्यापक तौर पर नहीं अपनायेंगे । पर इस तरह हमको नहीं होने देना है और शक्ति का निर्माण करना है । पानी निर्माण हो गया है, उससे अब शक्ति का निर्माण करना ही बाकी है !

(केरल के रचनात्मक कार्यकर्ताओं से, मंगलपाड़ी, कण्णनूर २२-८)

www.vinoba.in

सर्वोदय बनाम पश्चिमी लोकतंत्र

(जयप्रकाश नारायण)

गांधीजी ने जिस विचार-धारा का प्रतिपादन किया, उसमें भारतीय संस्कृति की छाप थी। अपने देश में यों अधिक तो राजे-रजवाड़ों का ही राज्य रहा है, लेकिन जनता में स्वतंत्रता की भावना और स्वायत्त-शासन के बीज पर्याप्त मात्रा में थे। पर आजादी के बाद हम लोगों ने जो संविधान अपने देश के लिए बनाया, उस पर अधिक छाप पाश्चात्य देशों की पड़ी है। अधिकतर इंग्लैंड और अमेरिका से प्रभावित होकर ही हमारा संविधान बना है। जिस आजादी का नेतृत्व गांधीजी ने किया, उसके ऊपर छाप गांधीजी की होगी, ऐसी अपेक्षा सारे देश और सारी दुनिया की थी। देश की व्यवस्था और शासन के विषय में गांधीजी के अपने विचार भी थे। पाश्चात्य जनतंत्र में मत देने के बाद जनता का काम करीब-करीब खतम हो जाता है। अपने देश में भी आज गणराज्य नहीं है, पार्टी-राज्य है। दूसरे देशों में स्वायत्त-शासन का हाथ होता है, इसलिए वहाँ लोकतंत्र अधिक ठीक से चलता है। फिर भी काफी आलोचना वहाँ होती है। पार्टी-राज्य को जनता का राज्य कैसे बनाया जाय, इस पर लोग काफी सोचते हैं। दूसरे तरीकों को, तानाशाही, फासिज़्म वगैरह को छोड़ दीजिये। पाश्चात्य लोकतंत्र भी सही मानी में गणराज्य नहीं बन सकेगा; क्योंकि विज्ञान के कारण आज आर्थिक केन्द्रीयकरण हुआ है। राज्य के या पूँजीपतियों द्वारा आर्थिक उत्पादन और उसका विनिमय होता है। इसलिए पूँजीवादी व्यवस्था जहाँ आज है, वहाँ समाजवादी व्यवस्था कायम करने की कोशिश हो रही है, लेकिन वह गणराज्य नहीं हो रहा है। समाजवादी व्यवस्था में और भी केन्द्रीयकरण होगा। ऐसी हालत में राज्य-सत्ता विकेन्द्रित करना कठिन अथवा असम्भव होगा। राज्यसत्ता थोड़े से लोगों के हाथ में होगी। चुनाव वगैरह होंगे, लेकिन निश्चय करने का अधिकार थोड़े से लोगों के हाथ में होगा। हमने भी यहाँ उसीकी नक़ल की है।

असफल पाश्चात्य जनतंत्र

सौभाग्य से अंग्रेजों के वक्त अधिक केन्द्रीयकरण नहीं हुआ, पर आज हम लोग बहुत तेजी से केन्द्रीयकरण की ओर जा रहे हैं। प्राइवेट सेक्टर और पब्लिक सेक्टर, दोनों में केन्द्रीयकरण की बू है। केन्द्र ने कुछ सत्ता राज्य-सरकारों को और राज्य-सरकार ने जिला, घटक और पंचायतों को कुछ अधिकार बाँटे हैं, पर वे बहुत थोड़े हैं। जो राजनीतिक पक्ष हैं, वे भी केन्द्रित हैं। सारा काम ऊपर से चलता है। केन्द्रित निधि है, वेतन-भोगी कार्यकर्ता हैं, जनता के सामने मतदान का ही काम रहता है। यों अपवाद के रूप में स्वतंत्र उम्मीदवार भी चुन कर आते हैं, लेकिन इनकी गणना नगण्य है। पार्टियों को ही चुनना पड़ता है। चुनाव-पद्धति में जो दोष हैं, जातीयता, भ्रष्टाचार, गुटबन्दी वगैरह, इनको तो छोड़ दीजिये, ये न भी रहें, तो भी इन केन्द्रित पक्षों के चुनाव से गणराज्य नहीं बनता और सर्वोदय सोलह आने गणराज्य होता है। गांधीजी की स्वराज्य की व्याख्या यही थी कि हर किसीका अपना राज्य। यह कैसे सम्भव है? जब पटना-दिल्ली के राज्य की जरूरत ही नहीं रहेगी, व्यवस्था भर रहेगी, जैसे डाकघर, रेल वगैरह। इनकी व्यवस्था भी जनता कर सकती है। शासन का काम रुपये में एक आना रहेगा। मार्क्स-लेनिन ने भी शासन-मुक्त समाज (स्टेट्लेस सोसाइटी) की कल्पना की थी। गांधीजी भी वही चाहते थे।

वास्तव में लोकतन्त्र राजनीतिक प्रश्न नहीं है, वह एक नैतिक प्रश्न है। नागरिक अपने-अपने में सुधार करेगा, अपने कर्तव्य को समझेगा, आन्तरिक शासन, अपने ऊपर शासन अथवा अनुशासन जितना होगा, उतना ही ऊपर के शासन की जरूरत कम होगी। दूसरे किसीकी भी आजादी छीनना, स्वातंत्र्य की निशानी नहीं है। सबका ही राज्य होना चाहिए, बहुमत का नहीं और पाश्चात्य लोकतंत्र तो आज बहुमत तक ही सिर्फ आ पाया है।

सर्वोदय में सबका राज्य, सबके हित के लिए होगा। एक राज्य के क्षेत्र में काम करने से ही काम नहीं चलेगा। बाकी के क्षेत्र जैसे के तैसे रहें, यह संभव नहीं होगा। लेनिन ने भी यही कहा था! स्वार्थों का संघर्ष रहेगा, तो काम नहीं सधेगा। हमारा जो एक आदर्श है, वह परिपूर्ण होना चाहिये। उस पर पूरा-पूरा अमल नहीं कर सकें, तो भी उसके नजदीक जाने की कोशिश तो करेंगे ही। लेकिन आदर्श के साथ समझौता करना गलत होगा। मैं नहीं कह सकता कि सर्वोदय के अनुसार जनता के काम में कम-से-कम दखल की स्थिति कब आवेगी, लेकिन इतना अवश्य कहना चाहता हूँ कि आज जो ये तीन राज्य-व्यवस्थाएँ हैं: मंगलकारी राज्य, समाजवादी व्यवस्था और साम्यवादी व्यवस्था; इन तीनों में राज्य-शक्ति बढ़ ही रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्न, वस्त्र, निवास आदि बुनियादी आवश्यकताओं में राज्य का दखल है। हम इसे ही मानवता के लिए घातक समझते हैं। जनता का पुरुषार्थ विकसित हो, परस्पर-विरोधी स्वार्थ न रहें, प्रेम, स्वावलंबन बढ़े, इसकी ओर हमें जनता को ले जाना है और यह हर लोकतंत्र-प्रेमी, स्वातंत्र्य-प्रेमी का कर्तव्य है कि इस नयी किस्म की गुलामी का विरोध करे। जिस तरह रेलगाड़ी में खतरे में जंजीर काम करती है, उसी तरह राज्य काम करे। यह सब एकदम नहीं हो सकता। इसके लिए जनता का नैतिक विकास करना होगा, उसे कर्तव्य-परायण बनना होगा। दूसरों के अधिकार का ध्यान रखना होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह राजनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक प्रश्न है। स्वार्थों का संघर्ष रहेगा, तो नैतिकता नहीं बढ़ेगी। जहाँ दूसरों का शोषण और दमन होगा, वहाँ सर्वोदय नहीं हो सकता, सर्वोदय में इतना नैतिक विकास होगा कि लोग यह समझेंगे कि अपने देश में इतने भूखे-नंगे लोग हैं, इसलिए हम ऐश-आराम नहीं लेंगे, आवश्यकता भर लेंगे। इसका निर्णय भी वे स्वयम् करेंगे। हमसे गरीब के समान होकर रहना तो संभव नहीं होगा, परन्तु आवश्यकताएँ कम-से-कम करेंगे। उस नैतिक विकास से सभी आर्थिक-राजनीतिक प्रश्न हल होंगे और उसीमें से एक ऐसी राज्य-व्यवस्था प्रकट होगी, जो सच्चे अर्थ में लोकतांत्रिक कही जायगी।

ट्रस्टीशिप का विकास

गांधीजी ने संपत्ति के क्षेत्र एक शब्द का प्रयोग किया था—"ट्रस्टीशिप।" विनोबाजी ने उसका विकास आज भूदान, संपत्तिदान के रूप में किया है। इस विस्तार में आज नहीं जाऊँगा। प्रमुख कार्य जो हो रहा है, वह नैतिक विकास का कार्य है। हमको और भी आगे जाना है। सच्चे लोकतंत्र की बुनियाद नीचे से यानी ग्रामराज्य से डालनी है। गाँव का इन्तजाम, हिफाजत, शिक्षा, स्वातंत्र्य, उत्पादन की व्यवस्था गाँव वाले स्वयम् करेंगे। जहाँ तक संभव हो, गाँव स्वावलंबी बनेंगे। दूसरों से भी मदद लेंगे, लेकिन यह काम दिल्ली और पटना में कानून बनाने से नहीं होगा। यदि ऐसा किया गया, तो अराजकता का रूप होगा, चोर, डाकू और बदमाशों का राज्य होगा। कोई भी राजनीतिक पक्ष वैसा करने की हिम्मत नहीं करेगा, क्योंकि उनको वोट मांगना पड़ेगा। विनोबाजी आज गाँव-गाँव घूम रहे हैं। गांधीजी होते, तो वे भी आज गाँवों में लोगों को समझाते हुए ही घूमते। गाँव के लोगों में शक्ति पैदा करना, उनमें नागरिकता का विकास करना, स्वायत्त शासन की शक्ति पैदा करना, यह और किसी तरह से भी संभव नहीं है। कदम-ब-कदम चलना होगा। नीचे से शक्ति बनेगी, तब काम होगा। बहुमत के लिए नहीं, बल्कि सबके लिए काम होगा। मैं अन्त में इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ, बहुत दुःख के साथ, कि हम लोगों ने अपने-अपने कर्तव्य का विचार छोड़ दिया है। भारतीय नागरिक के नाते, मानव के नाते हम सबका यह कर्तव्य हो जाता है कि हम निष्पक्ष होकर सोचें कि हम सबका हित किसमें निहित है? फिर उसीके लिए हम सब प्रयास करें।*

* रोटरी क्लब, गया में २३-८ को दिये गये भाषण से।

श्री नंबूद्रीपाद कब वेदाध्ययन शुरू कर सकेंगे?

(विनोबा)

प्रश्नः मुझे लगता है कि भारतीय संस्कृति के खिलाफ कम्युनिज्म खड़ा है। आपकी क्या राय है?

विनोबा: कम्युनिज्म योरप की परिस्थिति में से पैदा हुआ है। वहाँ पूँजीवाद का जोर था। बड़े-बड़े कारखाने, बड़े-बड़े शहर वहाँ बनाये गये। दुनिया भर की संपत्ति वे इकट्ठा करते थे। फिर मालिक और मजदूरों का झगड़ा हुआ। मजदूरों को मालिक ऊपर उठने नहीं देते थे। इसलिए उसकी प्रतिक्रिया के स्वरूप कम्युनिज्म पैदा हुआ। याने यह स्वयंपूर्ण विचार नहीं है। जो प्रतिक्रिया-रूप विचार होता है, वह बदलता ही रहता है। सोशॅलिज्म भी स्वतंत्र विचार नहीं है। एक है पूँजीवाद की प्रतिक्रिया और दूसरी है, व्यक्तिवाद की। दोनों प्रतिक्रिया-रूप पैदा हुए, इस वास्ते उनमें पूर्ण दर्शन भी नहीं है। एक में है—व्यक्ति विरुद्ध समाज और दूसरे में है—पूँजी विरुद्ध श्रमशक्ति। वास्तव में दोनों में विरोध होने की जरूरत नहीं थी। वे विरोध मिट सकते थे। व्यक्ति समाज का ही अंश है। अगर समाज का हित व्यक्ति नहीं सोचेगा, तो व्यक्ति का भी उससे हित नहीं होगा और व्यक्ति का

www.vinoba.in

विकास नहीं हुआ, तो समाज का भी विकास नहीं होगा। इस तरह व्यक्ति और समाज, दोनों एक-दूसरे पर आधार रखते हैं। बुनाई में जैसे ताना और बाना ओत-प्रोत होते हैं, वैसे ही व्यक्ति और समाज का संबंध है। ताने और बाने का इंट्रेस्ट एक-दूसरे के विरोध में नहीं होता। उसी तरह व्यक्ति और समाज का इंट्रेस्ट वास्तव में भिन्न नहीं है। पूँजी और श्रम, दोनों का विरोध बताया जाता है। पर पूँजी याने क्या? जो श्रम भूतकाल में हो चुका, वही पूँजी बनी और जो श्रम आज करते हैं, वह श्रम है! कल के श्रम का आज के श्रम के साथ विरोध नहीं हो सकता। परंतु हमने जो श्रम भूतकाल में कर रखा है, वह चंद लोगों के हाथ में पैसे के रूप में आया। इस प्रकार योरप में सेंट्रलाईजेशन होता गया, इस वास्ते झगड़ा करके वह पूँजी छीन लेंगे और श्रमशक्ति को ऊपर उठायेंगे, ऐसा "वाद" वहाँ आया। दुनिया में कहीं भी कोई वाद पैदा होता है, तो वह सारी दुनिया में चल जाता है। इसलिए वह भारत में भी आया, परंतु वाद प्रतिक्रिया-रूप में होने के कारण बदलते रहते हैं। समाजवाद के भी कितने प्रकार हुए हैं! हिंदुस्तान का एक अलग प्रकार है, क्योंकि पूँजीवाले भी उससे नहीं डरते! उनको आश्वासन मिला है कि तुम्हारा प्राइवेट सेक्टर जैसा का वैसा रहेगा। इस तरह समाजवाद का कहाँ क्या रूप होगा, भगवान् ही जाने! हिटलर भी अपने को समाजवादी ही तो कहता था! आजकल समाजवाद 'वेलफेयर स्टेट्' का भी रूप ले रहा है। याने समाज की उन्नति करना ही समाजवाद का रूप होता जा रहा है। इस प्रकार सोशॅलिज्म जगह-जगह बदल रहा है। यही हालत कम्युनिज्म की है। मार्क्स की पुस्तक में जो कम्युनिज्म है, वह आज रशिया में नहीं है। लेनिन और स्टालिन की पॉलिसी में फरक था। अब तो वहाँ विश्वशांति और को-एक्झिस्टन्स की बात चल रही है। इस पॉलिसी में बाधा डालने वाले कुछ साथियों को भी हटाया गया है। चीन में दूसरे ही प्रकार का कम्युनिज्म है। भारत में जो कम्युनिज्म है, वह तो संविधान के अंदर रह कर काम करने जा रहा है। इस प्रकार कम्युनिज्म भी बदलता रहा है। इस वास्ते कम्युनिज्म भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है, ऐसा कहा जा सकता है, फिर भी वह बदलता ही है, इसलिए कभी हिंदुस्तान की संस्कृति में भी वह शामिल हो सकता है!

तेलंगाना में हमने देखा है कि कम्युनिस्ट भगवान् के भजन में शामिल होते थे! हमने कहा: "पूँजीवाद से भी ज्यादा झगड़ा तुम्हारा भगवान् से है, तो तुम लोग भजन में कैसे आते हो?" कहने लगे, "हम मास-कॉन्टैक्ट (जन-संपर्क) के लिए यह करते हैं।" हमने कहा, "मास-कॉन्टैक्ट के लिए भजन करते हो, सो तो ठीक है, परंतु वह सिर पर ही बैठ जायगा न! वह बड़ा खतरनाक है।" तो, ईश्वर के लिए उनका कायमी विरोध नहीं है, परंतु उनको भास हुआ है कि ईश्वर का नाम लेने वाले 'पूँजीवादी स्टेटस्-को' चाहते हैं। उन्हें गुस्सा है, पूँजीवाद पर, परंतु वह उतरता है, ईश्वर पर। परंतु यहाँ का ईश्वर एक कोने में रहने वाला 'एरीस्टोक्रेट' नहीं है। वह तो अद्वैतवादी है—घट-घट का रहिवासी है। प्रत्येक शरीर में रहता है। ऐसे सर्वव्यापक प्रभु की भक्ति यहाँ चलती है। इसलिए भारतीय-तत्त्वज्ञान का वह स्थान नहीं है, जो योरप के तत्त्वज्ञान का है। इस वास्ते धीरे-धीरे ईश्वर को भी वे मानने लगेंगे।

मालिक हम या ईश्वर?

परंतु आज जो अपने को आस्तिक कहलाते हैं, वे भी क्या करते हैं? झूठ बोलते हैं, दूसरों को ठगते हैं, स्वयं मालिक बनते हैं। याने वे खुद ईश्वर के शत्रु बनते हैं! हमको उम्मीद है कि हिंदुस्तान में कम्युनिज्म धीरे-धीरे सर्वोदय की तरफ आयेगा, परंतु उसके लिए सिर्फ एक बात की जरूरत है कि हम जो आस्तिक कहलाये जाते हैं, वह अपनी मालकियत मिटायें। आस्तिक याने ईश्वर को मानने वाले! ईश्वर कौन है? वही मालिक है। अगर हम मालिक बनते हैं, तो हम ईश्वर का ही स्थान लेते हैं! यह तो नास्तिकता है। इसलिए सही आस्तिकता रखनी चाहिए। सही आस्तिकता याने परमेश्वर ने जो चीजें दी हैं, उनका भोग सबको मिले। इसीका नाम है सर्वोदय।

सर्वोदय स्थिर सिद्धांत है। स्वयंपूर्ण है। वह प्रतिक्रिया-रूप नहीं है। परंतु कम्युनिज्म अस्थिर है, सो बदलता ही रहता है। अस्थिर सिद्धांत का परिणाम स्थिर सिद्धांत पर नहीं हो सकता। इस वास्ते सर्वोदय का ही परिणाम धीरे-धीरे यहाँ के कम्युनिज्म पर होने वाला है। भारतीय संस्कृति का रंग आज ही उस पर चढ़ रहा है। परिणामस्वरूप उनकी ओर से एक नेता ने काळड़ी में जाहिर किया कि जमीन की मालकियत मिटाने का काम, जो ग्रामदान-पद्धति से होता है, वह कानून से नहीं हो सकता। हम कम्युनिज्म से डरते नहीं, न हम उसको अपना शत्रु ही मानते हैं। उल्टे, हम उनको खाने बैठे हैं! हम उनको खाकर पचाने वाले हैं! आप ग्रामदान करके उनको चबाने में हमको मदद करियेगा! इस तरह सारा कम्युनिज्म भारत में पच जायेगा। आखिर ये लोग हैं कौन? भारत के बाहर के तो हैं नहीं! श्री नंबूद्री-पाद हमसे मिलने आये थे। वह पहली ही भेंट थी। इस वास्ते बात भी क्या हो सकती थी? हमने उनसे कहा, आपका जीवन-चरित्र सुनाइये। तो उन्होंने बताया कि वे बचपन में वेदाध्ययन करते थे। तो कम्युनिस्ट ने भी वेदाध्ययन किया है! आखिर वह संस्कार जायेगा कहाँ? अगर सर्वोदय का काम यहाँ होता है, तो वे फिर से वेदाध्ययन करने लगेंगे। बचपन में जो किया होगा, वह अज्ञान से, माता-पिता ने कहा इस वास्ते, श्रद्धा से किया होगा, पर अब समझ-बूझ कर वही करने लगेंगे। परंतु आप सब हमारा विचार समझ कर निजी मालकियत मिटा दो, फिर देखो, श्री नंबूद्रीपाद वेदाध्ययन शुरू करते हैं या नहीं!

(पक्कानारपुरम्, केरल, '२८-७)

ग्रामदानी गाँव और प्रचलित कानूनी-स्थिति

(अण्णासाहब सहस्रबुद्धे)

श्री गोविंदरावजी,

आपका पत्र मिला। भूदान-यज्ञ-आंदोलन में "दान" शब्द की जो व्याख्या है, उसकी तुलना, भूदान पर बने कानूनों में व्यवहृत "दान" शब्द के साथ करते हुए, आपने स्पष्टीकरण चाहा है।

दान और गिफ्ट!

आज कोई व्यक्ति सर्वसाधारण रूप से दान करता है, तो जिसको वह दान मिलता है, वह उस दान की जमीन का मालिक बन जाता है। फिर वह उसे बेच सकता है, दूसरे को दे सकता है या उस पर कर्ज भी ले सकता है। यह आज के कानूनों की प्रचलित स्थिति है! इसलिए भूदान या ग्रामदान-क़ानूनों में "दान" या 'गिफ्ट' शब्द वैसा प्रयुक्त नहीं होना चाहिए, जैसा कि सर्वसामान्य अर्थों में आज प्रगट होता है। विनोबा ने "दान" का अर्थ शंकराचार्य के शब्दों में—"दानं संविभागः" किया है। हमें सर्वत्र इसी अर्थ में "दान" शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए। अगर दान के चालू अर्थ को और उसीके अंग्रेजी प्रतिशब्द "गिफ्ट" को हम इस्तेमाल करते रहेंगे, तो स्वामित्व-विसर्जन की जो हमारी मुख्य बुनियादी चीज़ इस आंदोलन में है, उसीके ऊपर हम आघात करेंगे। इसलिए जो भी भूदान-कानून बनें, उनमें "दान" शब्द का हमारा जो अर्थ है, वह निश्चित रूप से प्रकट हो जाना चाहिए और आज के भूमि-कानूनों में "दान" शब्द का जो प्रचलित अर्थ है, उसके साथ की भिन्नता भी स्पष्ट हो जानी चाहिए।

इसी तरह देश में जो भूमि-कानून बन रहे हैं, जैसे 'ट्रान्सफर ऑफ प्रॉपर्टी ऐक्ट', 'राइट ऑफ सक्सेशन ऐक्ट', 'हिंदु कोड ऐक्ट' आदि, उनका भी विचार भूदान-कानून को करना होगा। उसे कहना होगा कि इन भूमि-विषयक कानूनों का असर भूदान या ग्रामदान में प्राप्त जमीन पर या भूदान-कानून पर नहीं होगा, क्योंकि इन भूमि-कानूनों की बुनियादी चीज है, प्रॉपर्टी के निजी स्वामित्व का स्वीकार, जो कि ग्रामदान के ठीक विपरीत है! अतः हम सावधानी बरतेंगे, तभी हम ग्रामदान में निहित निजी स्वामित्व-विसर्जन के विचार के प्रति न्याय कर सकेंगे। कार्यकर्ता स्वयं इस पर सोचें और कानूनी पंडितों से भी मशविरा करें।

कोऑपरेटिव कानून

हमारे उद्देश्यों से युक्त भूदान या ग्रामदान-ऐक्ट जब भी बने, उसके पहले ग्रामदान में मिली हुई जमीन को हम आज के प्रचलित कोऑपरेटिव ऐक्ट के मुताबिक कानूनी स्वरूप दे सकते हैं या नहीं; इस पर भी हमें सोचना चाहिए। ये ऐक्ट भी वैसे तो प्रॉपर्टी के स्वामित्व को तो मानते ही हैं और इन कानूनों के मातहत, किसी कोऑपरेटिव संस्था का सदस्य बनने के बाद यदि उससे कोई सदस्य हटना चाहता है, तो उसे कुछ मुआवजा देने का प्रबंध भी ऐसे ऐक्टों में है।

पर सही दिशा में यदि विचार किया जाय, तो ग्रामदान-आंदोलन के कारण जमीन का मसला सहकारिता के आधार पर अच्छा हल किया जा सकता है। वस्तुतः ग्रामदान में सहकारी तत्त्व के आविष्कार के लिए बहुत अधिक गुंजाइश है। दस-बीस शख्स भी यदि निजी मालकियत छोड़ कर अपनी जमीन को एकत्रित कर लेते हैं और इस अवस्था को यदि आज के कोऑपरेटिव कानून स्वीकार कर लेते हैं, तो सहकारी जीवन का एक अच्छा रूप देश के सामने आ सकता है। इसी तरह ग्राम-दान के गाँवों की जमीन का मसला भी कोऑपरेटिव सोसायटियों के रूप में सहज सुलझाया जा सकता है। ग्रामदान में जमीन सारे गाँव-समाज की ही होती है। उसके

www.vinoba.in

बाद व्यक्ति का भूमिस्वामित्व समाप्त हो जाता है। फिर वह शख्स उसे छोड़ कर अगर बाहर जाना चाहे, तो सोसायटी उसे दूसरी मदद कर सकती है, लेकिन कानून मुआवजा (कॉम्पेन्सेशन) देने का आदेश उसे न दे। आज के प्रॉपर्टी ऐक्ट, इन्-हेरिटेंस् ऐक्ट आदि जमीन का मसला सुधारने में मदद नहीं कर सकते, उल्टे जमीन के टुकड़े ही वे अधिक बनाते हैं। यही स्थिति दूसरे कानूनों की भी है। ग्रामदान ही इन सबका एकमात्र इलाज है। पर इन कोऑपरेटिव कानूनों में भी हमें ग्रामदान की दृष्टि से सुधार कराने होंगे। पहले तो कोऑपरेटिव सोसायटी ऐक्ट में यह व्यवस्था रहती भी थी कि कोई सदस्य उससे हट नहीं सकता था एवं अगर वह हटे भी, तो सोसायटी के नुकसान के बोझ में ही उसे हिस्सा बँटाना पड़ता था। आज के ग्रामदान में, कोऑपरेटिव सोसायटियाँ यदि बनें, तो उनमें कोई भी सदस्य आ-जा सकता है, लेकिन जमीन के टुकड़े नहीं होंगे, न वह किसी एक परिवार के निजी स्वामित्व में होगी। सारे समाज की दृष्टि से ही उस जमीन का उपयोग किया जायगा। अतः ग्रामदान की भावना को धक्का न लगाते हुए आज के कोऑपरेटिव ऐक्ट में हमें क्या सुधार करने चाहिए, इस पर सबको सोचना होगा और विशेषज्ञ इस पर सोचें, ऐसी मैं प्रार्थना भी करूँगा।

ग्राम-संगठन एवं ग्राम-निर्माण

गाँव-संगठन की बात आपने पूछी है। इसका कोई खास ढाँचा हम बना कर न रखें। संगठन इस तरह बने कि जिसमें हर परिवार यह महसूस करे कि उसे ग्रामराज की स्थापना में भाग लेना है, और वह ले सकता है। सहायतार्थ कभी बाहर के लोगों को बुलाना भी होगा, लेकिन भार गाँव वालों को ही उठाना होगा और जैसे-जैसे गाँव वालों का अनुभव और ज्ञान बढ़ता जायेगा, वैसे-वैसे संगठन का ढाँचा बढ़ाना और बदलना होगा।

ग्रामदान के गाँवों का निर्माण और नागरिकों, सेवकों और सरकार की उसके प्रति क्या एवं कितनी जिम्मेवारी है, इस पर भी हमें सोचना पड़ेगा। सरकार को यह भी सोचना होगा कि ग्रामदानी बन जाने के बाद गाँव की 'क्रेडिट' 'वर्दिनेस' (प्रतिष्ठा, इज्जत) नष्ट नहीं होती है। इसी तरह, पूरा ग्रामदान न होकर वह सत्तर-अस्सी फीसदी ही होता है, पर उतने अंश में भूमिस्वामी स्वामित्व छोड़ कर भूमिहीनों को समान हिस्सेदार बना लेते हैं, तो उसका भी हमें स्वागत करना होगा और उन्हें कानूनी मदद पहुँचानी होगी। ग्रामदान के गाँवों का निर्माण-कार्य किसी एक संस्था की तरफ से ही हो, ऐसा भी हम न सोचें। कम्युनिटी प्रोजेक्ट बढ़ रहे हैं। सरकार की ऐसी जितनी भी एजेंसियाँ निर्माण-काम में हाथ बँटा सकती हैं, उन सबका इसमें आवाहन करना होगा कि वे इसमें हर तरह से मदद करें। सरकार को भी मानना चाहिए कि यह काम उसीका है। सरकारों को ऐसा सहयोग प्रकट करके प्रचलित कानूनों में सुधार भी करने चाहिए। मद्रास-सरकार इस दृष्टि से मदद कर भी रही है। गाँव-सभा को कानूनी दिक्कतों से सामुदायिक कर्ज नहीं दिया जा सका, तो व्यक्तिगत रूप से वह वहाँ दिया गया। कानून में सुधार होते ही ग्राम-सभा या सहकारी संस्था उस कर्ज की जिम्मेवारी अपने पर उठा लेगी, ऐसा सरकार ने स्वीकार भी कर लिया। खेती के मौसम के पहले उस सरकार ने बीस लाख रुपये भी बाँट दिये। अन्य सरकारें भी यह तरीका अपना सकती हैं।

हमारी निर्माण-समितियाँ ही सरकारी सहायता द्वारा प्राप्त पैसे का बँटवारा करने की जिम्मेवारी भी क्यों उठायें ? ये समितियाँ तो वायुमंडल बनाने और बना हुआ वायुमंडल कायम रखने के लिए बनायी गयी हैं। निर्माण-काम तो गाँववालों पर छोड़ कर हमें सिर्फ उनको मार्गदर्शन करना चाहिए। सरकार भी सहायता के लिए अधिकारी नियुक्त कर सकती है। इस तरह अनेक सवालों पर सोचा जा सकता है, लेकिन सरकार को पहले ग्रामदान के प्रति अपना रुख प्रकट करके उसके उद्देश्यों के प्रति अपनी स्पष्ट स्वीकृति जाहिर करनी होगी, अन्यथा अधकचरे सहयोग के कारण यह समस्या खड़ी होगी कि एक ओर तो सरकार कार्यकर्ताओं के प्रति सशंक बनी रहा करेगी, दूसरी ओर कार्यकर्ता भी सरकार की आलोचना करते रहेंगे !*

१६-८-'५७

* महाराष्ट्र के भूदान-कार्यकर्ता श्री गोविंदराव देशपांडे के नाम लिखे पत्र से।

बच्चे भी यह कर सकते हैं।

दो बातें ध्यान में रखनी हैं। बिना सेवा किये और उत्पादन किये खाना नहीं है। हाँ, कोई बीमार है, तो बात दूसरी है। कोई बूढ़ा है, उसका भी पालन हम करेंगे, परंतु हरेक को कुछ सेवा, कुछ उत्पादन करना है और जो उत्पादन करेंगे, उसमें कुछ हिस्सा दूसरे को देना है। इस तरह सर्वोदय-समाज बच्चे भी बना सकते हैं।

—विनोबा

केरल से विदाई की पावन वेला में !

(विनोबा)

आज हमारी केरल-यात्रा का अंतिम दिन है। अभी यहाँ एक गंभीर प्रसंग हुआ। शांति-सेना की स्थापना केरल की विशेषता मानी जायगी। ग्रामदान तमिलनाड़, उड़ीसा और दूसरे प्रांतों में भी हुए हैं। केरल के कार्यकर्ताओं को भी पहले इतना विश्वास नहीं था कि ग्रामदान होंगे। परंतु यहाँ की जनता की उदारता भी कम नहीं है। तथापि केरल की विशेषता ग्रामदान नहीं है। यहाँ ग्रामदान के आगे का कदम उठाया है याने शांति-सेना की स्थापना यहाँ की गयी है !

आज यहाँ आठ लोगों ने प्रतिज्ञा ली। शांति-सेना की प्रतिज्ञा लेने का अर्थ यह होगा कि वे अपना जीवन और प्राण जन-सेवा में अर्पण करते हैं। वे अपनी सेवा में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखेंगे, अहिंसा और सत्य पर हमेशा चलने की कोशिश करते रहेंगे और लोगों को उसी राह पर ले जायेंगे।

इस मंगल वेला में परमेश्वर का स्मरण करके प्रतिज्ञा ली गयी है, इस वास्ते ईश्वर का आशीर्वाद बारिश के रूप में मिल रहा है। यह अद्भुत घटना है। प्रतिज्ञा के पहले बारिश का अंदाजा नहीं था, परंतु जहाँ प्रतिज्ञा लेने के पहले बारिश का अंदाजा नहीं था, परंतु जहाँ प्रतिज्ञा लेना खतम हुआ, वहाँ बारिश का आना शुरू हुआ ! इसका मतलब है, परमेश्वर इस साथ के है।

केरल प्रदेश को हम एक विश्वास के साथ छोड़ रहे हैं। यहाँ के वृद्धों के और जवानों के साथ हमारी प्रगाढ़ मैत्री हुई। चार महीने सब लोगों ने काया, वाचा, मन से काम किया। जहाँ हम यह स्थान छोड़ते हैं, वहाँ से आगे काम जारी रखने की उन्होंने प्रतिज्ञा ली है। परस्पर-प्रेमभाव रख कर वे लोगों के पास उनकी सेवा के लिए पहुँचेंगे। आज आठ ने प्रतिज्ञा ली; आगे सैकड़ों होंगे। यह बीज बोया गया है। उसका बड़ा वृक्ष होगा। खुशी की बात है कि यहाँ आज कन्नड वाले भाई भी उपस्थित हैं। यहाँ जो ज्योति प्रगट हुई है, वह आगे भी बढ़नी चाहिये।

केरल की तरफ सारे भारत का, सारी दुनिया का ध्यान रहेगा, क्योंकि यहाँ शांति-सेना का आरंभ हुआ है। इसलिए यहाँ के कार्य-कर्ताओं पर प्रभु ने बड़ी भारी जिम्मेवारी डाली है और वह उन्होंने विश्वास के साथ उठायी है। हम नहीं चाहते कि आज ज्यादा लोग प्रतिज्ञा लें। हम केवल दिखावा नहीं चाहते, पक्की बुनियाद चाहते हैं। यह बुनियाद आज आठ लोगों ने डाली है। आगे दिन-ब-दिन कार्य बढ़ेगा। पहले सैकड़ों लोकसेवक बनेंगे, फिर उनमें से शांति-सैनिक होंगे।

महात्मा गांधीजी की इच्छा थी कि भारत में शांति-सेना हो। उसके लिए काफी कोशिश भी की गयी। परंतु उस वक्त हम, उनके साथी कमजोर थे। अब उनके मरने के बाद हम क्या कर रहे हैं ? महापुरुषों के शरीर से मुक्त हुआ आत्मा शरीर में रहते हुए जितना काम करता है, उससे ज्यादा काम वह बाद में करता है। इसलिए शरीर में रहते हुए गांधीजी ने जो कार्य किया, उससे ज्यादा कार्य आज हो रहा है। यही देखिये कि ये केलप्पन्जी गांधीजी से प्रेरणा पाकर उन्हींका काम करते आये हैं। हरिजनों के मंदिर-प्रवेश के बारे में उन्होंने उपवास किया था। उस वक्त गांधीजी ने उनको साथ दिया था। अब गांधीजी की शांति-सेना स्थापन करने की इच्छा पूर्ण करने के लिए केलप्पन्जी आगे आये। यह काम गांधीजी की आत्मा कर रही है। इसी तरह महापुरुषों की आत्मा काम करती है। जब वे शरीर में होते हैं और उस वक्त वे जो काम करते हैं, उसे लोग देख सकते हैं, परंतु शरीर छोड़ने पर भी वे जो काम करते हैं, वह काम लोग नहीं देख सकते। पर जैसे परमेश्वर का आशीर्वाद हमको बारिश के रूप में हासिल हुआ है, वैसे ही आज यहाँ गांधीजी की उपस्थिति हमने महसूस की !

उड़ीसा की ग्रामदान-क्रांति के बाद तमिलनाड में ग्रामराज्य की बुनियाद बनी। वह बल लेकर हम यहाँ केरल में आये और यहाँ हमारी ताकत और बढ़ी। यहाँ अब शांति-सेना बनी है। हम कर्नाटक में जा रहे हैं। इस समय हमारी ताकत और भी बढ़ी है, ऐसा हम महसूस करते हैं। दिन-ब-दिन यह ताकत बढ़ती ही रही। इसी प्रकार सबकी ताकत बढ़े, यही हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। इससे ज्यादा इस गंभीर प्रसंग में हम कहना नहीं चाहते। जिन्होंने लगातार चार महीने हमारे साथ काम किया है, उनकी सद्बुद्धि परमेश्वर बढ़ाये और अपना आशीर्वाद उनको दे, यही हम प्रार्थना करते हैं।

(मंजेश्वरम्, कण्णनूर, २३-८-'५७) ——

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ
६ सितंबर सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

भौतीक और नैतीक, दोनों !

(वीनोवा)

अीन दीनों लोगों ने बहुत सारा भार सरकार पर डाल दीया है। बहुत हुआ, तो थोड़ा सहयोग दे देते हैं। बड़ी सेना खड़ी करने के लीअे पैसे की ज़रूरत है, तो लोग टैक्स दे देते हैं और समझते हैं की हम नागरीक सुरक्षीत हैं! परंतु जब तक वे स्वयं नीर्भय नहीं हैं, तब तक वे सुरक्षीत नहीं हैं! बल्की वे अधीक दुर्बल हैं, क्योंकी सारी दारोमदार सेना पर रख छोड़ी है। "हमारा संरक्षण हम कर सकते हैं," अैसा वीश्वास ही नहीं है! लड़ाई शुरू हुई और अुसमें यदी हमारी सेना पीछे हटी, तो यह सुन कर ही सारे-के-सारे अेकदम कमज़ोर बन जाते हैं! सोचते हैं, अब हमारा क्या होगा? मानो देश का 'मॉरल' (नैतीक शक्ती) खतम हो गयी! अैसे डरपोक देश को तो सेना भी बचा नहीं सकती! अीस वास्ते देश का हरेक नागरीक नीर्भय होना चाहीअे, जीवन मृदु नहीं, तपयुक्त होना चाहीअे, भोग-साधन बढ़ाने नहीं चाहीअे। तभी देश बलवान होगा। अीसका अर्थ है की देश के सद्गुण बढ़ने चाहीअे।

जनता की समस्या जनता की शक्ती से, अुसके गुणों से ही हल हो सकती है, अीसका दर्शन भी हमें होना चाहीअे। अीसलीअे सीर्फ जमीन बंटी, अीतने से ही काम नहीं होगा। वह प्रेम से ही 'बंटनी चाहीअे और केवल दान नहीं, परंतु करुणा, प्रेम, स्नेह, ये गुण भी बढ़ें, अैसा होना चाहीअे। भूमी की समस्या कीसी-न-कीसी प्रकार से हल होगी ही। चीन में अेक प्रकार से हुई, रशीया में दूसरे प्रकार से! अपने देश में भी भूमी-समस्या मीटने वाली है। जमीन गरीबों को मील चुकी है, अीसमें जीसको संदेह है, वह मूर्ख है! जो स्वयं काश्त नहीं करता, अुसके हाथ में जमीन अब रह नहीं सकती। पर क़ानून से या सत्ता से जमीन बंट सकती है, दील नहीं जुड़ सकते! भौतीक समस्या हल होने से ही देश की अुन्नती नहीं होती अेवं भौतीक समस्या हल हुअे बीना भी अुन्नती नहीं होगी! परंतु भौतीक समस्या नैतीक तरीके से ही हल होनी चाहीअे। जहां भौतीक समस्या अीस प्रकार हल हुई, की वहां नैतीक गुणवीकास का दर्शन होना चाहीअे। अीस तरह भौतीक और नैतीक गुण-वीकास अेक होते हैं, तब आत्मा अूपर अुठेगा और देश की अुन्नती होगी।

(मंगलूर, २५-८)

* लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से।

सर्वोदय की दृष्टि :

रायपुर की घटना और उसका सबक !

आज देश की स्थिति इतनी स्फोटक और नाजुक बन गयी है कि जरा-सी चिनगारी कहीं पड़ते ही दावानल भड़क उठता है। भीतर ही भीतर सुलगता असंतोष किस रूप में कब बाहर आयेगा, इसका कोई अन्दाजा अब नहीं रहा है।

परसों रायपुर में ऐसी ही स्थिति खड़ी हो गयी। एक क्रिश्चियन संस्था में विद्यार्थी-समारोह के एक नाटक में केवल नटराज की मूर्ति रखने के प्रसंग को लेकर ही अधिकारियों एवं छात्रों के बीच मतभेद हुआ, बीच में वह मनमुटाव रुका या संगठित (!) हुआ और ता. २६ को एक विरोध-जुलूस के रूप में वह फट पड़ा। बाद में पत्थर-वर्षा, गोली-वर्षा आदि उसके अनिवार्य प्रकार खुल कर प्रकट हुए। पहले निषेध, फिर जुलूस और बाद में एक ओर से पत्थर एवं दूसरी ओर से एकदम, सीधे गोली ही, यह आज का नित्यक्रम ही बन गया है! पहले पत्थर या पहले गोली, यह जाँच का विषय भले ही बन जाय, होते हैं दोनों ही, और फिर आगज़नी, गोली-लूट आदि के रूप में ये प्रकार बढ़ते जाते हैं। इसी तरह उस संस्था की दस लाख की इमारत भी जला डाली गयी। पत्रों का निवेदन यह है कि संस्था-अधिकारियों ने कुछ ज्यादती की, पुलिस ने स्थिति संभाली नहीं एवं गोली भी तुरंत शुरू कर दी और फिर गुंडा-तत्त्वों ने खुल कर अपना कार्यभाग साध लिया! मौत एक छात्र की हुई। मानव-हत्या आज ऐसी आम हो गयी है कि लोगों को दस लाख की इमारत के भस्म होने का जितना अफ़सोस है, एक जीवन के चले जाने का उतना नहीं!

किसका कितना दोष है, इस पर बहस करने से कोई लाभ नहीं है! मानो कि यह सिद्ध हुआ कि पुलिस निर्दोष थी; या मानो कि यह सिद्ध हुआ कि जुलूस निर्दोष था, तो भी न तो आगे गोली-वर्षा रुकने वाली है, न उपद्रवों का स्वरूप ही बदलने वाला है। जरा-सा बहाना मिलने पर ये दोनों ही फट पड़ते हैं, क्योंकि मूलभूत समस्या को ही न तो कोई स्पर्श करता है, न उपद्रवों का मुकाबला करने के लिए सरकार या सरकार-पक्ष के पास सिवा लाठी-गोली के अब कोई साधन बचा है, न जनता के हाथ में असंतोष-नाराजी प्रकट करने के लिए उपद्रव के सिवा कोई चीज ही रह गयी है! यह स्थिति कितनी भयानक है, इस पर शायद उतनी गंभीरता से सोचा भी नहीं जा रहा है! जैसा ज़ालिम रोग, वैसा ही ज़ालिम इलाज, फिर भी हम यही सोचते हैं कि रोगी बच जायगा, यानी समस्या हल हो जायगी और शांति और कानून भी बच जायेंगे! गोली-वर्षा से ही शांति-कानून की रक्षा हो जाती है, यह जैसे अब भ्रम मात्र रह गया है, वैसे उपद्रवों से समस्या सुलझ जाती है, यह भी एक धोखा-धड़ी ही है। परंतु यह एक ऐसा विषचक्र है कि दोनों का छुटकारा इसमें से नहीं हो पा रहा है। हम मान लेते हैं कि प्रथम उपद्रव होने पर ही गोली चलायी जाती होगी, परंतु प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या सिवा गोली के, प्रतिकार करने की दूसरी कोई राह बची ही नहीं है? या गोली से ईप्सित साध्य ही हो जाता है? देखा यही गया है कि गोली अब तात्कालिक इलाज (Remedy) तक नहीं रही है, क्योंकि फौरन वह स्थान युद्धस्थल में परिणत हो जाता है। पुलिस ज्यादा हिंसा करे, तो मजमा छिप कर अपने उपद्रव करने लगता है। इस तरह आज गोली असफल है, उपद्रव भी असफल हैं और परिणाम बचता है, नाश या भीतर ही भीतर बढ़ती आग के रूप में, जो और किसी अवसर की प्रतीक्षा में रहती है। सरकार और जनता, दोनों को क्या इस परिस्थिति पर गंभीरतापूर्वक नहीं सोचना चाहिए? या कौन दोषी है, इतना ही हम देखते रहेंगे? या आज के तरीके से सर्वथा भिन्न नैतिक प्रकार की "पहल" कौन सर्व-प्रथम हाथ में ले, इसीकी प्रतीक्षा करते रहेंगे?

आज जनता की बुनियादी समस्याएँ भी न तो जनता से, न सरकार से ही हल हो पा रही हैं और असंतोष बढ़ता ही जा रहा है। राजनीतिक पक्षों में सरकारी पक्ष ऐसे प्रसंगों पर या तो निष्क्रिय रहता है या सरकारी तौर-तरीकों का समर्थन मात्र करता है। विरोधी पक्ष अवसर से लाभ उठाने की ही ताक में रहते हैं! परिणामतः देश भर में असंतोष, उपद्रव, गोली आदि के ही दृश्य देखे-सुने जाते हैं। ये सब परिस्थितियाँ ही क्या सहज अराजकता की जन्मदात्री नहीं बन सकतीं? सबके लिए गंभीरतापूर्वक सोचने का यह प्रसंग है और खासकर है, नागरिकों के लिए सोचने का। देश में सज्जनों की जमात छोटी नहीं है। पर वह भी निष्क्रिय एवं असहाय हो गयी है। परंतु जहाँ राजनीतिक पक्ष और सरकार इस मामले में असफल हैं, नागरिक वहाँ असफल हो नहीं सकते, अगर वे सक्रिय हों! राजनीतिक पक्ष दलगत स्वार्थों की और सरकार सत्ता एवं शासन की चौखट से बाहर निकल कर सोच ही नहीं पाते! सज्जन सज्जन हैं, तटस्थ भी

www.vinoba.in

हैं, इसलिए उनके लिए कोई मार्ग ढूँढ़ निकालना असंभव नहीं, अपितु आज की परिस्थिति में और भी सहज है ! सवाल इतना ही है कि यह 'सज्जनता' 'सज्जन-शक्ति' कैसे बने ? नागरिक यदि अब ऐसी सज्जन-शक्ति के उपार्जन में नहीं लगेंगे, तो वे स्वयं कितने भयानक खतरे में हैं, इसके आसार स्पष्ट दीख पड़ रहे हैं। जगह जगह फूट पड़ने वाली ये घटनाएँ भविष्य की संकेत मात्र हैं !

और, सज्जनशक्ति उपार्जन के कारगर रास्ते ही क्या आज विनोबाजी नहीं बता रहे हैं ? यदि ये रास्ते भी किसी को कारगर नहीं लगते हैं, तो वे सामने आयें, स्वयं ढूँढ़ें, और सज्जनों की शक्ति प्रकट करें ! पर 'यह भी नहीं' और 'वह भी नहीं', ऐसा ही हम करते रहेंगे, तो हमारी क्या हालत होगी, कहा नहीं जा सकता !

काशी, ३०-८ —लक्ष्मीनारायण भारतीय

हम भूमि की आसक्ति ही तो बढ़ाना चाहते हैं !

(विनोबा)

मैसूर प्रदेश का और कर्नाटक का आज यह हमारा प्रथम दिन है। भूदान-आंदोलन के साढ़े छह वर्ष के बाद हम यहाँ आ रहे हैं। अल्प भूमिदान से भूदान-यज्ञ-आंदोलन का आरंभ हुआ था। उसके बाद बिहार प्रदेश में लाखों एकड़ भूमि का दान मिला। फिर उड़ीसा में ग्रामदान मिले और तमिलनाड़ में ग्रामदान के साथ ग्राम-संकल्प जोड़ा गया। ग्राम-संकल्प याने गाँव के लोग सामूहिक संकल्प करते हैं कि हम अपने गाँव का कारोबार संभालेंगे, गाँव का सब इंतजाम हम करेंगे। याने वह एक तरह का छोटा स्टेट् ही बनेगा ! उसके बाद हम केरल में आये।

हमने केरल में शांति-सेना की स्थापना की। आज हिन्दुस्तान में शांति रखने की जवाबदारी पुलिस और सैन्य पर है और लोग अपनी जिम्मेवारी झगड़ा करने की समझते हैं ! कहीं-कहीं तो गोलीबार भी चलते हैं। तो इससे मुक्ति मिलनी चाहिये। पर केवल सरकार की टीका करने से मुक्ति नहीं मिलेगी ! आज भिन्न-भिन्न पोलिटिकल पार्टियाँ तरह-तरह के काम करती हैं। लेकिन वे सबकी सब, शांति की जिम्मेवारी उठाने के लिए, तैयार नहीं होतीं। इस वास्ते अब समाज को ही अहिंसा के जरिये शांति-स्थापना की जवाबदारी उठानी होगी। उसके बिना ग्रामराज्य की रक्षा नहीं होगी।

इतना सब करने के बाद हम कर्नाटक में आये हैं। इसलिए उतनी सारी पूँजी आपको मुफ्त में मिली है। यह हमारा पहला दिन नहीं है, साढ़े छह साल के बाद का पहला दिन है। इसलिए थोड़े समय में बहुत परिणाम की आशा हम कर्नाटक से करते हैं कि परिपूर्ण भूमि-क्रांति इस हनुमान की भूमि में होनी चाहिए। आज सवेरे हमारे स्वागत में एक भाई ने कर्नाटक का गौरव गाते हुए हनुमानजी का स्मरण किया था। हम आशा करते हैं, आप सारे हनुमान की वानर-सेना बन जायेंगे।

जैसे हवा, जैसे पानी, वैसी भूमि सबको मिलनी चाहिए, यह समझने में मुश्किल नहीं है। कम-से-कम शिक्षित या बिलकुल ही तालीम न पाया हुआ भी इस बात को समझता है, इतनी यह आसान बात है; परंतु पढ़े-लिखे विद्वानों को समझने में मुश्किल जाती है, क्योंकि वे दुनिया भर के भिन्न-भिन्न वाद सीखे हैं, पर कार्य नहीं सीखे ! वाद करते रहते हैं। और हमने निश्चय किया है—"वादो नावलंब्यः। बाहुल्यावकाशात्। अनियत तत्त्वाच्च।" यह नारद-वाक्य है। "वाद में नहीं पड़ना चाहिये, क्योंकि वाद बढ़ता ही जाता है और उसमें समय नष्ट होता है। परिणाम कुछ नहीं आता।" इसलिए हम वाद में पड़ते नहीं। आंदोलन के पहले दिन से आज तक कई प्रकार की शंकाएँ लोग उठाते हैं। परंतु अब वह कम हो गया है। लोग पूछते-पूछते थक गये, क्योंकि बाबा घूमते-घूमते थका नहीं। इस वास्ते अब उनके सामने एक ही विचार है—इस काम में अपना हिस्सा बँटाना चाहिये। हमारा विश्वास है कि हिंदुस्तान में ऐसा एक भी शख्स नहीं रहेगा, जिसने इस काम में हिस्सा नहीं लिया।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने जाहिर किया कि हम भूदान-आंदोलन यहाँ शुरू करेंगे। लोग कहने लगे कि यह आंदोलन भारत में चला, लेकिन पाकिस्तान में जमीन कौन देगा ? गफ्फार खाँ ने जवाब दिया, जहाँ तक पठान लोगों का ताल्लुक है, ज्यों ही यह कार्य यहाँ शुरू हो जायगा, पठान लोग पीछे नहीं रहेंगे। यह मैंने इसलिए बताया कि सत्य का प्रचार होता ही है। सत्य स्वयं प्रचारक होता है। विज्ञान के जमाने की माँग है कि मालकियत मिटे। विज्ञान के युग में छोटे-छोटे देश नहीं टिक सकते, तो छोटे घरों की क्या बात है ! देशों की सीमाएँ टूट रही हैं। देखते-देखते कई देश एक होंगे। यह एक प्रक्रिया चल रही है। जब देशों की सीमाएँ टूट रही हैं, तो वहाँ खेतों की सीमाएँ कैसे रहेंगी ? यह विज्ञान-युग की ही माँग है। विज्ञान कहता है : "मैं-मेरा" मत कहो, "हम-हमारा" कहो। यही बात आत्मज्ञान बोल रहा है। बाबा को इतना ज़ोर किस बात का है ? इसीका कि आत्मज्ञान और विज्ञान, दोनों बाबा के साथ हैं !

आज एक भाई कह रहे थे, जमीन की आसक्ति हम लोगों में बहुत है। मैं मानता हूँ कि जमीन की आसक्ति जो है, वह अच्छी है, वह आसक्ति बढ़नी चाहिये। सब लोगों की जमीन की आसक्ति अभी पैदा ही नहीं हुई है। वह पैदा होनी चाहिये। मैं चाहता हूँ कि हमारे चीफ मिनिस्टर को भी जमीन की आसक्ति हो और वे घंटा-दो घंटा जमीन पर काम करें। उससे आयु बढ़ेगी, आरोग्य बढ़ेगा और चीफ मिनिस्टर की और कामों में अक्ल अच्छी चलेगी। खुली हवा के स्पर्श से, भूमि-माता के स्पर्श से शरीर-श्रम से बुद्धि तेजस्वी बनती है। यह ऋषियों का अनुभव है। आपको "वृषभ" शब्द मालूम है। "वृषभ" बड़े महान् ऋषि हो गये। दोनों का अर्थ होता है बैल। आगे वृषभ और पीछे ऋषि चलता है। कन्नड़ में "बसव" माने बैल होता है। यहाँ कर्नाटक में "बसव" एक महान् ऋषि हो गये। इसका मतलब है, ऋषि का कृषि के साथ घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य बुद्धिवान तब बनेगा, जब उसका जमीन के साथ संबंध रहेगा। संबंध रहेगा याने मालकियत का नहीं, जमीन पर काम करने का। इस वास्ते हम कहते हैं, जैसे हवा और पानी की हरेक को आसक्ति होती है, वैसे जमीन की भी आसक्ति सबको होनी चाहिये। ईश्वरी योजना का यही अर्थ है कि जिस किसी चीज की आसक्ति होती है, वह चीज सबको मिले। यह वृत्ति भी होनी चाहिये। इस वास्ते आसक्ति के साथ जमीन का विरोध नहीं है, दोनों का स्नेह है। बाबा तो भूमि की आसक्ति बढ़ाना चाहता है !

(उल्लालम्, द० कॅनरा, २४-८)

हमारी विचार-संसद कार्यकर्ताओं और विचारकों के लिए

भूदान-आरोहण की समीक्षा

(महावीर प्रसाद केड़िया)

[हमारे माननीय मित्र श्री केड़ियाजी ने भूदान-आरोहण की समीक्षा करते हुए कुछ सवाल भी इस लेख में प्रस्तुत किये हैं। परिस्थिति का अध्ययन करके जैसे उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, वैसे ही हमारे अनेक साथी परिस्थिति और आंदोलन का अध्ययन करते रहते हैं। जो ऐसा अध्ययन करते हैं, वे श्री केड़ियाजी के द्वारा उठाये गये प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट करें, ऐसी हम प्रार्थना करते हैं। सब बातों का जवाब संपादक ही दें, यह पद्धति उचित नहीं है। इस पर दूसरे लोग भी विचार कर सकते हैं और करते हैं, यह इसी लेख पर से पता चलता है। सर्वोदय का यह प्रमुख अंग है कि स्वाध्याय में सब मदद करें। इसलिए विचारकों को हम, स्वाध्याय की दृष्टि से, ऐसे विषयों और प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। —संपादक]

भूदान-आरोहण को पाँच वर्ष पूरे हुए। १९५७ भी प्रायः समाप्त हो रहा है। मुझे यह बहुत आवश्यक प्रतीत होता है कि इस अवसर पर हम लोगों को इस आरोहण की समीक्षा करनी चाहिए। जो विचार मैं व्यक्त कर रहा हूँ, उनके पीछे प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, यह स्पष्टतः स्वीकार करना चाहिए। इस कारण चिंतन दोषयुक्त हो सकता है। फिर भी आरोहण से संबंधित सभी व्यक्ति—नेतृस्थानीय अथवा सामान्य कार्यकर्ता या सहानुभूतिशील मित्र—इस प्रश्न पर थोड़ा गंभीर चिंतन करें, यही मेरा अभिप्राय है।

हमारी आज तक की प्रगति का लेखा-जोखा पहले सामने रखता हूँ। इस आरोहण के द्वारा जनमानस में परिवर्तन काफी हद तक हुआ है। राष्ट्र के सबसे नीचे स्तर के लोगों की समस्या हमारे सामने स्पष्ट रूप से रखने का पूरा श्रेय इस आरोहण को है। जिन मित्रों ने प्रथम पंचवर्षीय योजना का खाका (ड्राफ्ट) देखा है, उन्हें विदित होगा कि भूमिहीन मजदूरों के सवाल को कोई स्थान ही उसमें नहीं मिला था। योजना-कमीशन के तत्कालीन सदस्य श्री रा० कृ० पाटिल तथा श्री नन्दाजी विनोबाजी से सितंबर १९५१ में योजना के बारे में वे विचार-विमर्श करके लौटे, उसके बाद ही योजना में भूमि-वितरण की समस्या को स्थान मिला।

आज देश की परिस्थिति यह है कि शहरों के रहने वाले लोग-मध्यम वर्ग या श्रमिक वर्ग-जो अपनी आवाज बुलन्द कर सकते हैं, उनको ही कुछ सुविधाएँ मिल

www.vinoba.in

पाती हैं। परन्तु जो भूमिहीन मजदूर हैं, वे तो बिलकुल पिछड़े हुए, दरिद्र तथा सदियों से पीड़ित और शोषित रहे हैं। ये मजदूर अधिकतर हरिजन तथा अन्य नीची जाति के लोग हैं। हरिजनों की मुख्य समस्या तो आर्थिक है। केवल समाज में उनको बराबरी का दर्जा दिलाने से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। जिस जमीन पर वे काम करते हैं, वह उनको मिलनी चाहिए, तभी उनका उद्धार होगा। इस दलित तथा पीड़ित वर्ग की आवाज इस आरोहण के द्वारा ही उठ रही है, यह निःसन्देह है।

इस आरोहण की दूसरी बड़ी सफलता इस बात में है कि भूमि पर से व्यक्तिगत मालकियत ही मिटाने का एक सक्रिय कार्यक्रम जनता के सामने रखा गया है, जो लेफ्टिस्ट पार्टियों द्वारा भी नहीं रखा जा सका! पर रायटिस्ट-लेफ्टिस्ट, दोनों को यह विचार आज मान्य है। ऐसा केवल भूदान-प्लॅटफॉर्म पर ही हो सका है!

भूदान-आन्दोलन का सबसे बड़ा काम यही माना जायगा कि इसने लोगों की मान्यताएँ बदली है। *जब समाज में प्रचलित मान्यताएँ बदलती हैं, तभी क्रांति होती है।* आज से पाँच साल पहले ग्रामदान की बात भी कोई बोलने की हिम्मत नहीं कर सकता था। जमीन का बराबर बटवारा करने की बात भी उन दिनों नहीं बोल सकते थे। परंतु आज मालकियत मिटाने की बात छोटा-छोटा बच्चा बोलता है, ऐसी शक्ति पैदा हुई है। बिलकुल ३० साल पहले के इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। एक समय था, जब लोग 'वंदेमातरम्' का नारा लगाते हुए डरते थे। फिर वही राष्ट्र 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' का नारा लगाने की हिम्मत कर सका था। उसी तरह से भूमि के एक अंश के दान से आज हम ग्रामदान तथा मालकियत-विसर्जन की बात तक पहुँच सके हैं। यह निःसन्देह एक बड़ी सफलता है।

तीसरी बड़ी सफलता यह है कि राज्यसत्ता के सिवाय भी कुछ किया जा सकता है, यह भरोसा लोगों के मन में हुआ है। एक निहत्था राष्ट्र बिना हिंसा का आश्रय लिए स्वाधीन हो सकता है, यह आत्म-विश्वास पूज्य गांधीजी ने हमारे मन में पैदा किया। आज विनोबाजी ने उसी तरह हममें यह आत्म-विश्वास पैदा किया कि राज्य-सत्ता के बिना भी हम एक बड़ा परिवर्तन समाज में ला सकते हैं। कभी राज्य-सत्ता का विलोप हो सकेगा, तो इसी मार्ग से, ऐसा आज हमारे सामने स्पष्ट है।

एक और बड़ी सफलता इस आरोहण की है—लोगों में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा। आज तक सब लोग स्वार्थ में ही डूबे हुए थे। यदि कहीं कोई तथाकथित क्रांतिकारी कार्यक्रम सोचा या रखा गया, तो उसकी भित्ति व्यक्तिगत या दलगत स्वार्थ ही रही, उसमें सामूहिक हित की भावना नहीं रही। वर्तमान में हम मजदूरों तथा अन्य वर्गों की हड़तालों में भी दलगत स्वार्थ ही पाते हैं, उसमें राष्ट्र-हित या सामूहिक हित की दृष्टि नहीं रहती। मानव-समाज की सबसे बड़ी समस्या आज यह स्वार्थ-भावना है। स्वार्थ के कारण हम विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इस स्वार्थ-भावना के ऊपर उठने का पाठ हमें विनोबाजी आज फिर से पढ़ा रहे हैं। यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि आज के दूषित वातावरण में भी लाखों लोगों ने संत की पुकार पर बड़ा त्याग किया है।

आज तक की प्रगति का लेखा-जोखा संक्षेप में मैंने ऊपर रखा। यह प्रगति भी कम नहीं है, बल्कि इस अल्प अवधि में इतना कुछ हो सका, यह काफी महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ ही साथ हमें भविष्य के बारे में भी कुछ चिंतन करना चाहिये। इस आन्दोलन से लोगों ने बहुत बड़ी-बड़ी आशाएँ रखी हैं। १९५७ तक ५ करोड़ एकड़ जमीन की प्राप्ति की बात तथा बाद में ग्रामदान और ग्रामराज्य का सुनहला चित्र देश के सामने हमने रखा है। १९५७ तक ग्रामराज्य की कल्पना भी कुछ लोगों ने सामने रखी। जनता की इन आशाओं को हमें ध्यान में रखना होगा। ५ करोड़ की जगह ग्रामदान आया, परंतु हमें यह भूलना नहीं चाहिये कि आज तक तो ग्रामदान में देश की कुल जमीन का $\frac{1}{10}$ प्रतिशत भाग भी नहीं मिल सका है! लाखों लोग एक तरफ संत की पुकार पर दौड़े आये, तो दूसरी ओर देश की शिक्षित जनता तथा राजनैतिक पक्षों पर हम कोई विशेष प्रभाव अभी तक नहीं स्थापित कर सके हैं। हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ देश में चारों तरफ सिर उठा रही हैं। ऐसी हालत में मंजिल से हम कितने दूर हैं, यह स्पष्ट है।

ऊपर के साधारण विवेचन के बाद कुछ खास प्रश्नों की ओर भी पाठकों का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

भूमि-समस्या : इस आरोहण के फलस्वरूप जो वैचारिक क्रांति अब तक हुई है, उसको मूर्त रूप देना आगे का काम है। आज तक के ग्रामदान तो केवल सांकेतिक हैं, ऐसा मानना ही पड़ेगा। अधिकांश ग्रामदानी गाँवों में, बड़े-बड़े किसानों ने, अपना भाग नहीं दिया है। ये लोग अक्सर गाँव के बाहर रहने वाले होते हैं तथा गाँव की जमीन का अधिकांश भाग इन्हीं लोगों के पास रहता है। भूमि का वर्तमान चित्र नीचे एक कोष्टक में दिया गया है :

(१) ५ प्रतिशत व्यक्तियों के हाथों में $\frac{1}{3}$ से अधिक जमीन है।
(२) $\frac{2}{3}$ लोगों के हाथ में १५ प्रतिशत से भी कम जमीन है।
(३) मुख्यतया कृषि पर ही निर्भरशील लोगों के एक पंचमांश भाग के हाथ में जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं है।
(४) कृषिजीवी जनता का प्रायः आधा हिस्सा मजदूरी पर निर्भर रहता है।
(५) *कृषिजीवी जनता का बहुत बड़ा भाग बड़ी* मुश्किल से जीवनयापन कर पा रहा है।

यह है आज का चित्र। समस्या न केवल गंभीर है, परंतु इसका निराकरण अति शीघ्र आवश्यक है। हमारा काम कितनी तेजी से बढ़े, यही मुख्य विचारणीय प्रश्न है।

(शेष अगले अंक में)

—

ता० ९ सितंबर को जिनकी पुण्यतिथि है!

(गोपाल कृष्ण मल्लिक)

९ सितम्बर पू० किशोरलाल भाई की पुण्यतिथि का पावन दिवस है। बापू ने लिखा था—

"……वे एक तत्त्ववेत्ता हैं और गुजराती के लोकप्रिय लेखक। गुजराती के वे जैसे विद्वान हैं, वैसे ही मराठी के भी हैं। वे जातीय, प्रान्तीय, साम्प्रदायिक या प्रान्तीय अहंकार या दुराग्रह से बिल्कुल मुक्त हैं। वे एक स्वतंत्र चिंतक हैं। वे राजनीतिज्ञ नहीं, एक पैदाइशी समाज-सुधारक हैं। समस्त धर्मों के विद्यार्थी हैं। उनमें धार्मिक कट्टरता के कोई चिह्न नहीं हैं। वे जिम्मेदारी ओढ़ने और विज्ञापनबाजी से भागते हैं। इतने पर भी कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा, जो जिम्मेदारी ले लेने पर उसे, उनकी अपेक्षा, अधिक पूर्णता के साथ पूरा कर सके! बड़ी मुश्किल से मैं उन्हें गांधी-सेवा-संघ का अध्यक्ष बनने को राजी कर सका था। उनकी परिश्रमशीलता, सरल श्रद्धा के कारण ही संघ को इतनी महत्ता और उपयोगिता प्राप्त हुई। उन्होंने अपने स्वास्थ्य के साथ पूरी लापरवाही रख कर सदा अपना द्वार सत्यशोधकों के लिए खुला रखा। उन्होंने कई स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे हैं।"

उनके अवसान पर विनोबाजी ने उन्हें बुद्ध की कोटि का स्वीकार कर अपनी श्रद्धा अर्पित की थी।

बापू के अवसान के बाद, एक बार अपनी रोगजर्जर काया का खयाल तक न करके उन्होंने सहज बातचीत में हम लोगों से कहा था: "बापू के 'करेंगे या मरेंगे' इस अंतिम महामंत्र को मेरे जीवन में अजमाइश करने का यही अवसर भगवान् ने दिया है! चंदन की तरह घिस जाने की यही सुवेला आयी है।" और वे 'हरिजन' पत्रों में फिर ऐसे जुटे कि मर कर ही दम लिया!

* * *

कुछ दिन मैं उनके साथ था। गुजराती भी सीखता था। जिस पेन्सिल से वे मुझसे लिखाते या नोट कराते थे, वह बहुत जल्दी-जल्दी घिसती और टूटती थी। मैं झल्लाता और वे मुस्कुरा देते। मैंने कहा, दूसरी बढ़िया ले आऊँ? उन्होंने कहा—"यही यहाँ रहने की कसौटी है! स्वदेशी-व्रत नहीं छोड़ा जा सकता!"

एक दिन डाक की कुछ जरूरी चीजें भूल से मैं गोपुरी ले आया। मुस्कुरा कर सिर्फ इतना बोले—"आज की दोपहर मेरे लिए बेकारी की बेचैनी में बीती!"

उस रोज बहुत ही थक कर शय्या पर लेटे ही थे कि बगल के कमरे से पू० राजेंद्र बाबू आये। ये चौकी पर से उतर पड़े। जब तक राजेन्द्र बाबू उन्हें मना करते, वे निकट पहुँच चुके थे! राम-भरत मिलन के अवसर का वह नित्य दर्शन भारतीय शिष्टाचार का ही दर्शन कराता था!

वात्सल्य ऐसा था कि उस रोज कहे बिना नहीं रह सके कि—"गोपुरी का जीवन, भोजन आदि तुम्हारे लिए कैसा रहा? वहाँ मूँगफली और तिल का तेल खाते हैं। अच्छी बातें ग्रहण करना और शिकायतें अपने साथ न ले जाना।"

फिर कहा,—"अँधेरा हो चला है, जाओ। मील भर जाना है, पथरीला रास्ता है। देर से जाओगे, तो खाना भी छूट जायगा!" उनका वात्सल्य जैसे उनकी आँखों में उतर आया था!

आज उनके पावन स्मरण में हम सब की श्रद्धांजलि है!

—

www.vinoba.in

गुजरात का पत्र

(नारायण देसाई)

तंत्र-मुक्ति के बाद गुजरात में पूरा समय काम करने वालों की संख्या बढ़ गयी है। सन् '५७ से पहले यहाँ कोई १५ कार्यकर्ता पूरा समय देने वाले थे। अब ६२ कार्यकर्ता पूरा समय दे कर काम कर रहे हैं। यह कहने की जरूरत नहीं कि यह संख्या भी बहुत ही कम है। लेकिन इन कार्यकर्ताओं की श्रद्धा है कि काम जिस प्रकार चला है, इससे कार्यकर्ताओं की संख्या भी बढ़ेगी, क्रान्ति का काम भी होगा।

गुजरात का काम दो-दो जिलों के संपुट में बाँटा गया है। अलावा इसके, गुजरात के नगरों में घूमने वाली पदयात्रा तथा पाँच भाई-बहनों का एक 'सदा तैयार दल' (रिज़र्व फोर्स) भी है, जो जरूरत पड़ने पर किसी भी जिले में काम के लिए जा सकता है। इन दोनों टुकड़ियों के जरिये प्रान्त के जिलों का आपसी सम्बन्ध रहता है। हर महीने की सात तारीख को अहमदाबाद में संपुट के कम-से-कम एक कार्यकर्ता तथा गुजरात के मुख्य भूदान-सेवक मिलते हैं। तारीख और स्थान निश्चित कर देने के कारण इस सभा के लिए निमंत्रण की जरूरत नहीं रहती। कुछ जिलों में जिले के कार्यकर्ता भी महीने में एक दफा इसी प्रकार मिलते हैं। समितियों के विसर्जन के बाद इस प्रकार की विचार-विमर्श करने वाली सभाए आन्दोलन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई हैं, जो हर प्रान्त में अनुकरणीय हैं।

काम की व्यवस्था के बारे में इतना सोच कर अब हम प्रत्यक्ष काम की गति-विधि का विचार करें। हर जिले के काम का महत्त्व अपने में अलग है, इसलिए किसीको पहला-दूसरा स्थान न देते हुए हम गुजरात के दक्षिण सिरे से शुरू करें।

सूरत जिला बम्बई राज्य के सबसे बड़े जिलों में से एक है। यहाँ भूमि की समस्या भी तीव्र है। समाजवादियों का पारड़ी-सत्याग्रह भी इसी जिले में हुआ था। इस जिले में जितने रचनात्मक कार्यकर्ता हैं, उतने शायद देश भर में किसी एक जिले में नहीं होंगे। फिर भी अभी तक इस जिले में भूदान का काम अपेक्षाकृत कम हुआ था। अब यहाँ काम की खासी अच्छी योजना बन गयी है। यहाँ के तीन तालुकों में दो-दो कार्यकर्ता सतत यात्रा कर रहे हैं। ग्रामदान की दृष्टि से अनुकूल ऐसे ये क्षेत्र चुने गये हैं। और भी दो तालुकों में कार्यकर्ता सतत काम करने वाले हैं। इस जिले में अभी ग्रामदान नहीं हुआ, लेकिन जब यहाँ ग्रामदान होंगे, तो बड़ी संख्या में होंगे।

भरूच जिला रचनात्मक काम की दृष्टि से हमेशा पीछे रहा। लेकिन यहाँ के कुछ तालुकों में भूदान का काम अच्छा हुआ। यहाँ के एक तालुके में, जहाँ वर्षों से एक रचनात्मक कार्य करने वाला आश्रम था, ग्रामदान के लिए विशेष प्रयत्न करने का सोचा गया है। इस प्रदेश में दो ग्रामदान मिले हैं। अन्य कई मिलने की संभावना है। यहाँ मुख्य प्रश्न कार्यकर्ताओं की कमी का है।

बड़ोदा जिला ग्रामदान में, गुजरात में सबसे आगे है। श्री हरिवल्लभ परीख के सेवाक्षेत्र में ये सब ग्रामदान हुए हैं। कुछ ग्रामों में निर्माण का आयोजन भी हो रहा है। जिन तालुकों में ग्रामदान नहीं हुए, उनको भी जिला के कार्यकर्ता अछूता नहीं रहने देना चाहते। यहाँ सतत एक पदयात्रा चल रही है। ग्रामदान का काम गहरे पानी में पैठने का होता है। गुजरात के अधिकांश जिलों में अभी उसी-के लिए डुबकियाँ लगायी गयी हैं। थोड़े समय में जरूर ग्रामदान-मोती मिलेंगे।

आन्दोलन की दृष्टि से खेड़ा ज़िला काफी पिछड़ा रहा। अभी वहाँ ज़िला-निवेदक बने हैं। ज़िले की जनता नगरों के रंग से रंगी हुई है। ज़मीनें भी यहाँ की बहुत ही महँगी हैं। इसलिए यहाँ का काम टेढ़ी खीर है। अभी दो महीने तक गुजरात की नगर-यात्रा इसी ज़िले के शहरों में घूमती रहेगी। अभी तक देश भर में जो ग्रामदान हुए हैं, अनुकूल भूमि में हुए हैं। जब खेड़ा ज़िले-जैसे ज़िलों में ग्रामदान की बाढ़ आयेगी, तब समझा जायेगा कि देश में भूमि-क्रान्ति आयी है!

पंचमहाल जिले में अभी-अभी दो बहनें एकाग्रता से काम करने के लिए आयी हैं। बारिश में, बाढ़ में, गरीबों की झोपड़ियों में बहनें पहुँच जाती हैं और ग्रामदान का संदेशा सुनाती हैं। यहाँ के मुख्य कार्यकर्ताओं के आशीर्वाद इनको मिल चुके हैं। इसलिए आगे चल कर ग्रामदान-आन्दोलन में युवतियाँ क्या कर सकती हैं, इसका नमूना यह जिला दे सकता है।

अहमदाबाद जिले के दो मुख्य भाग हैं। उसकी आधे से अधिक जनसंख्या तो केवल अहमदाबाद नगर में बसी हुई है। अहमदाबाद जिले की मुख्य विशेषता सूतांजलि और सूत्रदान है। २५,००० गुंडियाँ इकट्ठी हो चुकी हैं और ७५,००० इकट्ठी करने का प्रयत्न चल रहा है। यहाँ प्रयत्न ऐसा होने वाला है कि जिले के सब कार्यकर्ताओं का निर्वाह सूत्रदान में से हो जाय।

साबरकांठा जिले में अभी तक गुजरात के भूदान-आन्दोलन के सभी नये प्रयोग हुए हैं। ग्रामदान-आन्दोलन में भी वह जोरों से अग्रसर हो रहा है। दो तालुकों में तालुका-दान की दृष्टि से वहाँ काम हो रहा है। इसलिए आरंभ के दिनों में एक बार सब ग्रामवासियों के कबूल कर लेने पर भी, वहाँ ग्रामदान का ऐलान नहीं होता है। कुछ दिन रुक जाते हैं। निश्चय पक्का है, इसका विश्वास हो जाने पर वह ऐलान किया जाता है। साबरकांठा जिले का बहुत सारा हिस्सा रियासतों में था। अभी यहाँ कोरी पाटी है, लेकिन उस पाटी पर ग्रामदान की सुन्दर छवि अंकित हो रही है।

महेसाणा जिला गुजरात के उन दो-तीन जिलों में से है, जहाँ आदिवासी बिलकुल नहीं हैं। यहाँ पर ग्रामदान का आयोजन ग्रामसंकल्प के आधार पर हो रहा है। कुछ बड़े-बड़े गाँवों के लोगों ने वस्त्र-स्वावलंबी बनने की इच्छा प्रकट की है। यहाँ पर गति ग्रामसंकल्प से ग्रामदान की ओर होगी।

बनासकांठा भी प्रायः कार्यकर्ताशून्य-जिला समझा जायेगा। लेकिन एक जीवनदानी दंपति, विमला बहन और जी जी महेता ने भूदान-आन्दोलन की ज्योत जलायी है। एक ग्रामदान हुआ है और यदि उस गाँव में संतोषकारक प्रगति हो, तो और गाँवों पर भी उसका असर अच्छा हो सकता है।

इस प्रकार गुजरात में भूदान-सेवकों का मुख्य ध्यान अभी ग्रामदानों पर लगा हुआ है। दूसरी ओर से जवानों को भी शरमाने वाले ७४ साल के ऋषि रविशंकर महाराज की अखंड पदयात्रा चल रही है। वे जहाँ जाते हैं, एक ही मंत्र सुनाते हैं: "मालिकी मिटने वाली है। कब, यह मैं ठीक से नहीं बता सकता, लेकिन इतना तो अवश्य जानता हूँ कि मालिकी टिक नहीं सकती।"

मैसूर में श्री शंकररावजी देव

मैसूर राज्य में भूदान और संपत्तिदान के लिए अब तक जो कुछ मिला है, वह बहुत प्रभावोत्पादक नहीं है। यहाँ लगभग १० हजार एकड़ भूमिदान, वार्षिक संपत्तिदान १५ हजार रुपये और तीन ग्रामदान—१ मैसूर में, १ बंगलौर में और १ टुमकूर में—मिले हैं। राज्य में क्रियाशीलता बढ़ गयी है, क्योंकि विनोबाजी इस प्रदेश में यात्रा कर रहे हैं।

श्री शंकरराव देव ने विनोबा के प्रवेश की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए इस प्रदेश में १० दिनों तक यात्रा की। आपने मंगलूर, मेरकारा, मैसूर मँड्या, टुमकूर, कोलार इरपनहल्ली और बंगलोर ऐसे कई प्रमुख नगरों और कस्बों का दौरा किया। आपने कार्यकर्ताओं की बैठकों और सार्वजनिक सभाओं में भाषण किये तथा स्पष्ट रूप से ग्रामदान का सिद्धांत समझाया और यह बताया कि किस प्रकार भूदान अहिंसात्मक ढंग से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ सुलझाने का रास्ता बताता है।

श्री देव ने जनता का ध्यान श्री विनोबा की मैसूर की पदयात्रा की ओर आकर्षित किया और उससे ग्रामदान का कार्य गम्भीरतापूर्वक करने तथा अधिकाधिक ग्रामदान करने की अपील की। आपने अपने भाषण में कहा कि "विनोबाजी जैसे क्रान्तिकारी का समुचित स्वागत केवल उन्हीं वस्तुओं से किया जा सकता है, जो वे वस्तुतः चाहते हैं। वे केवल ग्रामदान—इतने ग्रामदान कि जितने आप उन्हें दे सकते हो—माँग सकते हैं।"

श्री शंकरराव देव का बंगलोर शहर में दो दिनों का व्यस्त कार्यक्रम था। आपने विभिन्न संस्थाओं, छात्रों तथा काँग्रेस और समाजवादी दलों के कार्यकर्ताओं की सभाओं में भाषण किये।

१०-११ अगस्त को सभी कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन भी यहाँ हुआ था। श्री शंकरराव देव और श्री आर० आर० दिवाकर ने सम्मेलन में भाषण किये। इन दिनों भूदान-कार्यकर्ताओं की भी बैठकें हुईं।

बंगलोर में सर्वोदय-साहित्य-प्रचार-सप्ताह

विनोबाजी के जन्मदिवस के निमित्त ४ सितम्बर से ११ सितम्बर तक बंगलोर शहर में सर्वोदय-साहित्य प्रचार-सप्ताह मनाया जा रहा है। शहर के विभिन्न भागों के कार्यकर्ता गत १७ अगस्त को एकत्र हुए तथा जनता में भारी पैमाने पर बिक्री द्वारा सर्वोदय-साहित्य का प्रचार बढ़ाने और उसे लोकप्रिय बनाने का निश्चय किया। उक्त सप्ताह के सभी दिन शहर के विभिन्न हिस्सों में से कई जत्थे एकसाथ निकलेंगे और साहित्य-प्रचार करेंगे। उक्त आंदोलन के साथ नगर के विभिन्न हिस्सों में सार्वजनिक सभाएँ और भूदान-प्रदर्शनियाँ होंगी तथा प्रभात-फेरियाँ भी निकाली जायेंगी।

—एस. गुंडाचार, लोक-सेवक

---

www.vinoba.in

केरल-यात्रा के संस्मरण

(महादेवी)

भारत की आर्थिक समस्या पर सोचते हुए और भारत द्वारा विदेशी सहायता पर आधारित रहने के बारे में बातें करते हुए उस रोज विनोबा ने कहा : "अमेरिका दूसरे देशों का जीवनमान बढ़ाने के लिए मदद देकर दया करती है, लेकिन हम लोगों का ऐसा दयापात्र होना खतरनाक है। बिना बंधन के मदद लेने में हर्ज नहीं, ऐसा कहा जाता है, लेकिन मदद के साथ कुछ बंधन आ ही जाता है। फिर, अमेरिका में जो जीवनमान है, उससे वे सुखी हैं, ऐसी भी बात नहीं है। वहाँ आत्म-हत्या का प्रमाण अधिक है। विवाह-संबंध सुखकारक नहीं हैं। सुख बढ़ाने के लिए उत्पादन बढ़ाया, तो साथ-साथ तृष्णा भी बढ़ायी। तो सुख में कोई फरक नहीं; क्योंकि $\frac{\text{उत्पादन}}{\text{तृष्णा}}$ = सुख याने $\frac{१}{२}$ और $\frac{१००}{२००}$ इसमें क्या फरक है?

"अगर मैं अमेरिका जाऊँगा, तो उनसे मदद लेने की बात के बजाय, उनसे कहूँगा कि मैं 'मदद देने के लिए आया हूँ।' और कहूँगा कि 'तुम खतरे में हो, सुख घटाओ और आराम कम करो, तल्ले पर तल्ला क्यों चढ़ाते हो?

"आखिर में मानव का ध्येय क्या है? मानव में जो पशुता है, वह सुख की ओर खींचती है और मनुष्यता स्वातंत्र्य की ओर झुकती है। सब 'वाद' वाले सुख की ही बातें करते हैं, लेकिन मानव का ध्येय सुख नहीं हो सकता है। सुख और दुःख उतार-चढ़ाव के समान हैं। (उतार के समय सावधान रहने की जरूरत रहती है और चढ़ाव के समय कष्ट होता है।) लेकिन मानव का ध्येय समत्व ही है।

"लोग कहते हैं, वह दुःख में पड़ा है और सुख में भी मस्त पड़ा है। याने दोनों "पड़े" ही हैं, अर्थात् गिरे हुए हैं! तो, जिसमें समत्व है, वही खड़ा है। समत्व, सुख से या ऐशोआराम से प्राप्त नहीं होता है, बल्कि संयम से प्राप्त होता है।"

* * * *

भरतप्पुळा ('प्पुळा' याने मळयालम् भाषा में नदी) के किनारे, एक स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव का प्राचीन मन्दिर है। इस स्थान पर गांधीजी की रक्षा का विसर्जन हुआ था। हर साल १२ फरवरी को सर्वोदय-मेला यहाँ होता है। इसी स्थान पर बाबा और हम सब लोग नाव से नदी पार कर रहे थे। सुबह की वेला थी। नाव धीरे-धीरे नदी के बीच में आयी। नाव पर बैठ कर बाबा मन्दिर और रक्षा-विसर्जन के स्थानों का निरीक्षण कर रहे थे। वर्षा तो बाबा के स्वागत के लिए किनारे खड़ी हो गयी थी। सूर्य भगवान् प्राची की ओर से ऊपर आ रहे थे। तीनों मंदिरों में ब्रह्माजी का मंदिर छोटा और जीर्ण है। आवाज आयी, "ब्रह्माजी का मंदिर टूटा हुआ है। उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता।" बाबा ने कहा, "ब्रह्माजी तो पितामह हैं। उन्होंने पैदा कर दिया और उनका काम हो गया। उनको कौन पूछेगा? एक तो ब्रह्मा का मंदिर कहीं रहता नहीं। फिर, रहने पर उसकी कोई परवाह नहीं करते, जैसे घर में बूढ़ी माँ को कौन पूछता है? विष्णु और शिव को पूजते हैं, इसलिए कि विष्णु पालन करता है और उसका काम जारी ही रहता है। शिवजी से लोग डरते हैं, इसलिए उसको पूजना ही पड़ता है!

* * * *

श्री गोविंदन् केरल के रहने वाले हैं। कई सालों तक वे विनोबाजी के आश्रम, परंधाम में रहे हैं। ब्रह्मचर्य के साधक हैं। हमेशा आनंद से रहते हैं। बिहार में भी उन्होंने भूदान-यज्ञ में काफी काम किया है। अब विनोबाजी के आदेश से सारे केरल में पदयात्रा के द्वारा विचार-प्रचार करते हैं।

केरल में घूमते हुए एक गाँव में गोविंदन् की साध्वी माता विनोबाजी से मिलने आयी। विनोबा ने उनका क्षेम-कुशल पूछा। "पहले मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था, किंतु अब मैं रोज दो-ढाई घंटा "गीता-प्रवचन" पढ़ती हूँ। अब अच्छा हो गया है।"–ऐसा कहते-कहते वे इतनी भावनावश हो गयीं कि उनकी आँखों से भाव-गंगा प्रवाहित होने लगी। इसका उल्लेख बाबा अनेक बार करते हुए कहते हैं कि "गीता प्रवचन भवरोग और शरीर के रोगों के लिए भी भेषज बन गया है।"

* * * *

श्री केलप्पन्जी केरल के राजकीय पक्षों के नेता रहे हैं। गांधीजी के आदेश के मुताबिक देश के लिए सन् १९२० से ही उन्होंने त्याग, तप प्रारंभ किया था। केरल में हरिजन मंदिर-प्रवेश के लिए उन्होंने उपवास-सत्याग्रह भी किया था। प्रजा समाजवादी दल के भी नेता रहे। उससे त्यागपत्र देकर अब उन्होंने भूदान-यज्ञ में अपनी शक्ति-वृत्ति की पूर्ण आहुति देना तय किया है। यद्यपि केलप्पन्जी ७१ साल के वृद्ध पुरुष हैं, लेकिन २५ साल के उत्साही जवान के जैसी उनकी वृत्ति है। विनोबा उन्हें कभी विनोद से कहते हैं कि केलप्पन्जी तो ७१ साल के बच्चे हैं! सचमुच उनके उत्साह से लोगों में चेतना उत्पन्न होती है। जहाँ अभी खादी-ग्रामोद्योग आदि सेवा-कार्य चला रहे हैं, उस क्षेत्र में काफी ग्रामदान मिले हैं। वहीं (कोलीकोड के दो तालुकों में) सर्वोदय-समाज स्थापन करने के लिए केरल के कार्यकर्ताओं ने संकल्प किया है और शांति-सेना भी बनायी है।

तमिलनाडु प्रदेश की चिट्ठी

(एस० जगन्नाथन्)

ता० ६-७-'५७ को तिरुची जिला सर्वोदय-सेवकों की बैठक हुई। हर तालुके में जमीन बाँटने की व्यवस्था हुई। तिरुची जिले के सम्पतिदान के कार्य की जिम्मेवारी स्थानीय सर्व-सेवा-संघ के संचालक श्री संगीलीया पिल्लै ने अपने ऊपर ली है। तिरुची-तंजावूर जिला सर्वोदय-सम्मेलन अगस्त २४ और २५ को हुआ। जमीन बाँटने का काम तिरुची जिला लोकसेवक श्री एम. आर. पलनी स्वामी को सौंपा गया है। ७-७-५७ को सेलम जिला सर्वोदय-सेवकों की बैठक हुई। जमीन बाँटने तथा कोयंबतूर-सेलम जिला सर्वोदय-सम्मेलन सेलम जिले के एडप्पाडी गाँव में बुलाने का निश्चय हुआ। सेलम जिले में सम्पत्तिदान के कार्य की जिम्मेवारी भूतपूर्व मंत्री श्री गुरुपादजी ने ली है।

चेंगल्पेट और दक्षिण आर्काट जिले में अगस्त १५ ता० से जमीन बाँटने की व्यवस्था हो रही है। ता० २८-७-५७ को उत्तर आर्काट और दक्षिण आर्काट जिला भूदान-कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। करीब १०० सेवक आये थे। इतनी बड़ी रचनात्मक कार्यकर्ताओं की बैठक पहले नहीं हुई थी। उत्तर आर्काट जिला विनोबा का जिला है। दक्षिण मंडल के जिलों में मदुरा, रामनाड, तिरुनेलवेली में भू-वितरण और सम्मेलन की पूर्व-तैयारी हो रही है।

तमिलनाडु के चार मंडलों में चार सम्मेलन आयोजित हुए। पिछले वर्षों में अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन के बाद तमिलनाडु में भी सर्वोदय-सम्मेलन बुलाया करते थे। अब के चार मंडलों में चार सम्मेलन बुलाने से विशेष लाभ होगा।

तिरुमंगलम् तालुका-दान का काम जुलाई में फिर से शुरू किया। वहाँ यात्रा हो रही है। नोप्पूर उच्चपट्टी, मुंडुवेलंपट्टी, वडुगपट्टी, कामाक्षिपुरम् आदि पाँच और ग्रामदान हुए हैं। ग्रामदानी गाँवों के लोग ही यात्रा कर रहे हैं। भूदान-कार्यकर्ता भी उनके साथ यात्रा में हैं और मदद करते हैं। हर फिरके में यात्राओं की और भी व्यवस्था करने पर ज्यादा गाँव ग्रामदान में मिल सकते हैं। अगस्त महीने में सम्मेलनों का काम पूरा कर सितम्बर से तालुका-दान के काम को व्यापक बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। रामनाथपुरम् जिले में बड़गरै गाँव ग्रामदान में मिला है। आज तक तमिलनाडु में कुल ग्रामदान २२३ हैं।

मद्रास शहर के दाताओं से प्रार्थना की गयी है कि वे दान की रकम अदा करें। दाता खुद सम्पत्तिदान की रकम भेजने लगे हैं, जैसे–

मद्रास शहर से	रु० ४२४६–८–०	मदुरा से	रु० ५००–०–०
कोयंबतूर जिले से	,, ५०५–०–०	रामनाथपुरम् से	,, ३०३–१४–३

मद्रास शहर के सम्पत्तिदान-कार्य में गति लाने के लिए शहर के प्रमुख लोगों की बैठक ३०-७-५७ को हुई। मुख्य मंत्री श्री कामराज, निधिमंत्री श्री सी. सुब्रह्मण्यम् गृहमंत्री श्री भक्तवत्सलम् तथा शहर के व्यापारी-संघ के प्रतिनिधि और प्रमुख लोग आदि उसमें सम्मिलित हुए। तमिलनाडु में प्राप्त हुए २२० ग्रामदानी गाँवों में पुनर्निर्माण-कार्य के लिए २ करोड़ रुपये वसूल करने का निश्चय हुआ। "संपत्ति-दान पक्ष" मनाये जाने का और इस अरसे में १५ लाख रुपये वसूल करने का भी निश्चय हुआ।

भाषा की असली शिक्षिका!

बहनों के लिए भाषाएँ सीखना बहुत आसान है! गणित वगैरह में पुरुष जोर लगाते हैं, परन्तु भाषा सीखने में स्त्रियाँ ही प्रवीण होती हैं। बोलना शुरू करती हैं, तो क्या मजाल है किसीकी! इतनी वक्तृत्व-शक्ति स्त्रियों में होती है। 'गीता' के विभूति-अध्याय में भगवान् ने कहा है, "कीर्तिः श्रीः वाक् च नारीणां" (स्त्री में जो वाणी है, वह मैं हूँ।) इतनी शक्ति स्त्री में होती है। अतः वे हिंदी सहज सीख सकती हैं, दूसरों को सिखा भी सकती हैं! घर में आने के बाद पुरुष "चोर वेणुम्" (चावल चाहिए) कहें, तो भोजन नहीं देना चाहिए! रोज एकाध वाक्य तो वह हिन्दी में बोले। तभी पुरुष भी हिंदी सीख सकेंगे! —विनोबा

www.vinoba.in

सर्वोदय का क्षितिज सुनहला बापू की अभिलाषा !

धरती पर भूदान माँगने आया एक भिखारी। अनुपम एक भिखारी ॥

रूखे-सूखे बाल शीश के रूखी-सूखी काया।
आँखों में आलोक अलौकिक तेज ब्रह्ममय छाया ॥
अधरों से अमृत बरसाता जैसे ऋषि अधिकारी। अनुपम एक० ॥
जिसके अंतर में जलती है एक धधकती ज्वाला।
अणु-अणु से जिसके उद्भासित नूतन एक उजाला ॥
मानवता के मंदिर का सेवक श्रद्धालु पुजारी। अनुपम एक० ॥
भारत की सांस्कृतिक चेतना साधक औ मनस्वी।
संत साधु कर्मठ संन्यासी, जोगी और तपस्वी ॥
पर नहीं गेरुआ वस्त्र रंगाये, नहीं कमंडलधारी। अनुपम एक० ॥
सर्वोदय का क्षितिज सुनहला बापू की अभिलाषा।
राम-राज्य धरती पर लाने की सक्रिय परिभाषा ॥

क्रान्ति शब्द के बीच शांति के ने वाला अधिकारी। अनुपम एक० ॥
नहीं माँगता भीख, माँगता जो अधिकार मनुज का।
जिसके कर से हुआ आज नूतन संस्कार मनुज का ॥
पंचयज्ञ का दूत परोहित जन-जन का हितकारी। अनुपम एक० ॥
धन-धरती सब-कुछ समाज का, नहीं व्यक्ति अधिकारी।
प्रभुता सब पर नारायण की नर केवल प्रतिहारी ॥
जिसके महामंत्र के आगे शासक सत्ताहारी। अनुपम एक० ॥
इंच-इंच पर मरने वालों ने कण-कण दे डाला।
धरती का सर्वस्व लुटा जीवन-क्षण-क्षण दे डाला।
मानव में देवत्व जगाने वाला वह बलिहारी।
(झरिया में भूवितरण-समारोह पर छात्राओं द्वारा गायी हुई।)

सदस्यों का वक्तव्य

केरल में शांति-सेना की स्थापना

एक पावन प्रतिज्ञा

भारत को स्वाधीन हुए १० वर्ष हो गये, किन्तु हम अभी तक गांधीजी के ग्रामराज के स्वप्न को चरितार्थ नहीं कर सके। हम इसकी कोई झाँकी न तो राष्ट्रीय सरकार की नीति या कार्यक्रमों में अथवा गांधीजी के अनुयायियों के दैनिक रचनात्मक कार्यों में पा सके। उसी समय भूदान-आन्दोलन सर्वव्यापी अन्धकार में रजतरेखा के रूप में प्रस्फुटित हुआ। अब भूदान ने ६ वर्ष के कार्य के बाद ग्रामदान का पथ प्रशस्त किया है। ज्यों-ज्यों हम ग्रामदान के कार्य में अग्रसर हो रहे हैं, त्यों-त्यों ग्रामराज का चित्र स्पष्ट होता जा रहा है। आज ग्रामराज मोहक स्वप्न नहीं रह गया है। अब यह वास्तविकता में परिणत और अनुभूत हो सकता है।

आज सारे संसार भर में सरकार के ढाँचे के अन्दर समाज घुट रहा है। उस ढाँचे में व्यक्ति का पूर्ण और अनियन्त्रित विकास सम्भव नहीं है। सर्वव्यापी हिंसा और शोषण सतत वृद्धि पर हैं। इनसे व्यक्ति और समाज को मुक्त करने तथा ग्रामदान पर आधारित अहिंसक सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए और पूर्णतः नये दृष्टिकोण से, प्रभावकारी कार्य संघटित करना है। अहिंसक तथा शोषणमुक्त समाज मुख्यतः विधान-मंडलों या सरकारों द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता। वह क्रांति केवल जनता द्वारा हो सकती है। राज्य और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था तीन बातों पर आधारित हैं: (१) मतदान-पेटिका द्वारा प्राप्त जनता की सहमति, जो राज्य की राजनीतिक शक्ति का आधार बनती है। (२) जनता द्वारा प्रदत्त कर, जिससे राज्य का कोषागार बढ़ता है। (३) सेना, जो कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए राज्य की दण्ड देने वाली शक्ति की प्रतीक है। इनके स्थान पर यदि अहिंसक प्रतिरूप रखे जायँ, तो समाज की सर्वोदय-व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। निष्क्रिय मतदान के स्थान पर क्रियात्मक सम्मतिदान होना चाहिए; करों के स्थान पर सम्पत्तिदान और भूदान तथा पुलिस और सेना के बदले शान्तिसेना होनी चाहिए। यह प्रयोग तुरन्त, कम-से कम कुछ चुने हुए स्थानों में होना चाहिए। हमें यह सिद्ध करना है कि समाज में शान्ति की स्थापना के लिए राज्य के लोगों को विवश करने वाली शक्ति अनिवार्य नहीं है और एक नैतिक लोकतंत्र इस आधार पर नहीं बनाया जा सकता। हमारे लिए यह बात सम्भव होनी चाहिए कि पुलिस और सेना हटा दी जाय। महान् विचारकों के इस स्वप्न के चरितार्थ होने अर्थात् अहिंसक-सर्वोदय समाज की अनुभूति के लिए यही एकमात्र रास्ता है। हमने ऐसी शांतिसेना संघटित करने का संकल्प किया है, जो इस आदर्श के लिए अपना जीवन अर्पित करने को प्रस्तुत है। शांति-सैनिकों को लोकसेवक के लिए निर्धारित प्रतिज्ञा करनी होगी तथा शांति-सेना के सम्बन्ध में सर्वोदय-मंडल के आदेशों का पालन करने और अनुशासन-पूर्वक किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। निम्नलिखित पाँच व्रतों का पालन करना होगा:

(१) सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह का यथाशक्ति पालन;
(२) निष्काम सेवा यानी बिना किसी प्रतिफल की कामना के सेवा;
(३) सभी दलों से या सत्ता-प्राप्ति की राजनीति से पृथक रहना और सभी व्यक्तियों का, बिना उनके दल का विचार किये, अधिकतम सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा करना;
(४) वर्ग और जाति का भेद न मानना तथा सभी धर्मों के लिए समानता;
(५) भूदान के लिए अधिकतम समय और पूर्ण चिन्तन देना।

लोकसेवक इन वचनों से बँधे हैं। शांतिसेना के सदस्य साधारण स्थिति में लोकसेवक के रूप में; और विशेष अवसर पर सैनिक के रूप में कार्य करेंगे।

हमारा यह पूर्ण विश्वास है कि भारत में सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था इस शांति-सेना के प्रयत्नों द्वारा हो सकती है। यह किसी भी भारतीय को प्रेरित करने के लिए गौरवपूर्ण ध्येय है। पूज्य विनोबाजी के प्रेरक पथप्रदर्शन में इस सेना को संघटित करना हम अपना सौभाग्य समझते हैं। **हम इस महान् और पावन यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए अपने देशवासियों से अपील करते हैं तथा हम इस महान् कार्य के लिए अपने को अर्पित करते हैं।**

(१) केलप्पन्
(२) एकंडा वारियर
(३) जनार्दन पिल्लै
(४) के० कुमारन्
(५) के० राजम्मा
(६) कर्ता

बाद में दो और व्यक्तियों ने नाम दिये: (१) श्री गोविंदन् और (२) श्री दामोदरन् नायर।

बड़ोदा जिले में ग्रामदान

बारिश में यात्रा चल ही रही है। **ता० २७ अगस्त तक सात नये ग्रामदान प्राप्त हुए हैं: सिहान्द्रा, सातबेड़िया, सारींगपुर, रामसरी, कुंकावटी, कंकुवासण और खोखरा।** इनमें चार गाँव संखेडा तहसील में और तीन गाँव नसवाड़ी तहसील में है। अब बड़ोदा जिले की चारों तहसीलों में कुल मिला कर १५ और पूरे गुजरात में कुल २५ ग्रामदान हुए हैं। पदयात्रा जंगल-पहाड़ों के बीच है। टोली में ग्रामदानी गाँवों के ४० किसान भी हैं।

—हरिवल्लभ परीख

भूल सुधार—ता. २३ अगस्त के अंक में पृष्ठ ६ के दूसरे स्तंभ में १२वीं पंक्ति में 'कार्य बड़ा है' की जगह 'कार्य क्या है' तथा पृष्ठ ११ के प्रथम स्तंभ की २१वीं पंक्ति में 'संपत्ति प्राप्त करने' की जगह 'संमति प्राप्त करने' पढ़ने की कृपा करें। —सं०

श्री धीरेन्द्रभाई का कार्यक्रम

ता. ११ सितंबर को खादीग्राम से रवाना, ता. १४-१५ अहमदाबाद (हरिजन आश्रम, साबरमती), ता. १८ से २८ मैसूर, मार्फत-श्री मंजुनाथन्, २७५, दीवान्स रोड, मैसूर। ता. १-२ अक्टूबर, सर्व-सेवा-संघ, मगनवाडी, वर्धा (बंबई राज्य)। ता. ५ अक्टूबर को खादीग्राम वापस।

श्री सिद्धराज भाई का कार्यक्रम

ता. ८ सितंबर को खादीग्राम से रवाना, १० व ११—जयपुर (पता: राजस्थान भूदान-यज्ञ-बोर्ड, किशोर निवास, जयपुर) १२-१३ सर्वोदय-केन्द्र, खीमेल (वाया-रानी) राजस्थान। १४-१५ अहमदाबाद (हरिजन आश्रम, सर्व-सेवा-संघ, अंबर प्रयोग विभाग, अहमदाबाद १३) १८ से २८ सितंबर—मैसूर (पता: श्री मंजुनाथन्, २७५ दीवान्स रोड, मैसूर)।

www.vinoba.in

लाइसेन्स नं. ए. ३५४ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३४ (पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त) भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ६ सितंबर, '५७

शांति में शक्ति का दर्शन कैसे हो ?

(विनोबा)

आज संरक्षण-मंत्री श्री कृष्ण मेनन हमसे मिलने आये थे। बातचीत का सार यही है कि दुनिया के कूटनीतिज्ञों को आज सूझ नहीं रहा है कि दुनिया के मसले कैसे हल करें ! उन प्रतिनिधियों के मार्फत वे काम चलाते हैं, जो दूसरों को भयभीत रखने का ही काम करते हैं और शस्त्रास्त्र बढ़ाते जाते हैं ! गरीबों की सेवा तक वे नहीं कर पाते। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकत अली खान ने कहा था कि "हम भूखों मर जायेंगे, लेकिन 'डिफेंस' कमजोर नहीं होने देंगे !" अब भूखा कौन मरता ? क्या बोलने वाला ? यह तो बात करने का तरीका है। देश के गरीब लोग ही भूखों मरते हैं। इस तरह हर देश की जनता आज पीड़ित और भयभीत है। इसीलिए शांति की प्यास उसे लगी है और कोई 'शांति की शक्ति की राह' दिखाता है, तो वह उत्सुक होकर उसकी ओर देखती है।

हमने "शांति की शक्ति की राह" कहा ! आज शांति चाहने वाले 'स्टेटस्-को' चाहते हैं। वे समाज में बदल भी चाहते तो हैं, लेकिन बहुत धीरे-धीरे ! उधर समाज का परिवर्तन तुरंत चाहने वाले दूसरे लोग हिंसक क्रांतिकारी हैं। इस तरह शांति और क्रांति परस्पर-विरोध में खड़ी हैं। याने ये दो पक्ष हो गये। और हम चाहते हैं, शांति की शक्तिशाली राह, यानी 'शांति' में 'शक्ति' का दर्शन, अर्थात् शांति से क्रांति हो सकती है, यह लोगों को दीखना चाहिए। सर्वोदय का काम आज यही दिखा रहा है, इसलिए लोग भी उत्सुक होकर इसकी ओर देख रहे हैं।

साधन-साध्य की अभेद्यता

सर्वोदय तो मालकियत मिटाने का क्रांतिकारी काम करना चाहता है और वह समाज का वर्तमान असत्य रूप अहिंसा से ही बदलना चाहता है। हिंसा से रूप बदलता है, यह तो केवल आभास मात्र होता है। क्या रूस में जनता की शक्ति बनी है ? वहाँ क्रांति नहीं, उसका आभास मात्र है। क्रांति तो वह करेगा, जो साधनों में भी क्रांति करेगा। पूँजीवादी भी शस्त्र-शक्ति और पैसे की शक्ति से ही काम करता है, इसलिए वह पूँजीवाद को समाप्त न करके नया पूँजीवाद निर्माण करेगा ! एक रावण को खतम करके सवाई रावण को पैदा करेगा ! सच्ची क्रांति तब होगी, जब साध्य और साधनों में भी क्रांति होगी। पूँजीवादी मालकियत रखना चाहते हैं। सर्वोदय वह मिटाना चाहता है। यह हुई साध्य में क्रांति। पूँजीवादी हिंसा से मालकियत टिकाना चाहते हैं। हम भी यदि वैसा करेंगे, तो वह साधनों में क्रांति न होकर एक मालकियत की जगह दूसरी मालकियत आ जायगी ! हिंसा के साधनों से अहिंसक साध्य प्राप्त हो नहीं सकता। पवित्र साध्य अपवित्र साधनों से सिद्ध नहीं हो सकता। साध्य और साधन, दोनों पवित्र चाहिए, तभी क्रांति होगी। यही राह भूदान के द्वारा सर्वोदय आज बना रहा है। इसलिए जनता को यह करुणामृत-रसायन दीख पड़ता है !

(मंगलूर, २६-८-'५७)

जनता बने 'एक' और सरकार बने 'जीरो !'

मान लीजिये कि लड़ाई छिड़ जाय, तो यहाँ की आयात-निर्यात कुल बंद होगी। आपकी पंचवार्षिक योजना हाउस ऑफ कार्डस् की तरह गिर जायेगी ! यह ठीक है कि हिंदुस्तान तटस्थ रहना चाहता है ! तटस्थ आप रहेंगे, लेकिन युद्ध तटस्थ नहीं रहता ! वह आपके तट में आयेगा। इसलिए बाहर के आयात पर जो योजना बनी है, वह टिकेगी नहीं ! उस हालत में गाँव-गाँव कैसे बचेंगे ? इस वास्ते बाबा कहता है, ग्रामदान-आंदोलन 'डिफेंस मेजर' है। इस काम में सरकार की मदद बिलकुल न हो, ऐसा हम नहीं कहते। जिस काम में जरूरत है, वहाँ हम उनकी मदद ले सकते हैं। **परंतु हम चाहते हैं कि जनता बने "एक" और सरकार बने "जीरो" (०) और दोनों मिल कर बने "दस" (१०) जनता का एक निकल जाता है, तो सरकार का जीरो रह जाता है ! जीरो के साथ एक होता है, तो जीरो को भी कीमत आती है ! सरकार अच्छे काम करती है या खराब काम करती है, यह ख्याल नहीं। ख्याल है कि जनता की शक्ति कैसी बढ़ेगी, देश का 'डिफेन्स' कैसा बनेगा ? आज सब काम में न केवल सरकार का हाथ है, परंतु उसमें उनका दिमाग भी लगता है। वास्तव में बुद्धि लगनी चाहिये जनता की।**

(मंगलूर, २५-८) —विनोबा

सर्वोदय त्रिकालकारी है !

(विनोबा)

दुनिया की सरकारें आज कानून और राजनीतिक तत्त्वज्ञानों के आधारों पर चलती हैं, इसलिए दलों के बीच स्पर्धा बनी हुई है। फिर जिस पार्टी की जीत होती है, वही राज करती है, उसका तत्त्वज्ञान चाहे कुछ भी हो ! सरकारों के पीछे फौज का सैंक्शन होता है और बहुमत से कानून बना कर टैक्स वसूल किया जाता है। इसलिए उनके पीछे सबकी संमति है, ऐसा केवल आभास वे निर्माण करते हैं और वह आभास निर्माण करने का तरीका है, हाथों की गिनती ! यह पश्चिम से आयी हुई पद्धति है, जिसे वे 'विकसित राजनीतिक विचार' मानते हैं ! पर हमें यह बिलकुल 'क्रूड' (अपरिपक्व) विचार लगता है। पहले राजा जैसे सरदारों को चुन लेते थे, वैसे पक्षनेता आज कैबिनेट चुनता है। याने वह सर्वतंत्र स्वतंत्र है ! इस तरह दुनिया भर में "मेकॅनिकल डेमोक्रेसी" चल रही है। यह उन लोगों ने चलायी, जो इकट्ठा होकर रहना नहीं जानते, राजनीति में भी पिछड़े हुए हैं, सिर्फ विज्ञान में आगे बढ़े हुए हैं। फिर उन राष्ट्रों में परस्पर के बीच होने वाले द्वंद्व-युद्धों में कुल दुनिया फँस जाती है। यह "एडवांस पॉलिटिक्स" नहीं, क्षुद्र विचार है ! यह पूरा ढाँचा यूरोप को बदलना होगा। वास्तव में आवश्यकता हृदय बदलने की ही है।

अतः हमें राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में उनसे, जो हक पर ही ज्यादा जोर देते हैं और करुणा-कर्तव्य आदि पर उतना नहीं, बहुत ज्यादा नहीं सीखना है ! जिन्हें पचासों झगड़े पैदा करने हों, वे उस राजनीति का अनुकरण कर सकते हैं !

संक्रमण-काल सदा चालू है

कुछ लोग कहते हैं, "फिर 'ट्रैंजीक्शन पीरियड'-संक्रमण-काल में क्या होगा ?" संक्रमण तो प्रतिक्षण होता है ! भूतकाल गया, भविष्य-काल आ रहा है, तो दोनों के बीच संक्रमण ही है ! हर घर में यह होता है। एक पीढ़ी समाप्त हुई, दूसरी तैयार हो रही है, तो दोनों के बीच की पीढ़ी संक्रमण-काल में ही है ! इसलिए संक्रमण-काल में समझौता करना बुद्धिहीनता है ! संक्रमण-काल में ही सर्वोदय की स्थापना होगी और उस काल के समाप्त होने पर सर्वोदय-समाज को बलवान बनायेंगे। संक्रमण-काल के पहले विचार समझायेंगे। इस तरह तीनों अवस्था में सर्वोदय का ही काम करेंगे !

आज के विद्वान इसे अव्यवहार्य भी मानते हैं ! लेकिन यह अव्यावहारिकता गाली नहीं, गौरव है ! ब्रह्म कैसा है ? अव्यवहार्य है, याने वह व्यवहार का कॉइन (सिक्का) नहीं बन सकता ! वह तो व्यवहार को, बाजार को तोड़ेगा ! सस्ता खरीदने को ही आज व्यवहार मानते हैं ! हम कहते हैं, महँगा खरीदो, सस्ती चीज तो चोरी की होती है !

कहते हैं, लोग यदि नहीं मानेंगे तो ? तब भवभूति के शब्दों में "काल निरवधि है, अमर्याद है, पृथ्वी विपुल है, इसलिए कोई-न-कोई समानधर्मी पैदा हो ही जायगा।"

(मंगलपाड़ी, केरल, २२-८-५७)

—वर्धा जिले की आर्वी तहसील में १६ अगस्त से ३१ अगस्त तक के पक्ष में और दो ग्रामदान मिले : जांब एवं पांजरा।

—इलाहाबाद जिले के पथरावाँ ग्राम के २० भाइयों ने स्वामित्व-विसर्जन का संकल्प किया।

सिद्धराज ढड्ढा, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव-भूषण-प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी; टे० नं० १२८५।

www.vinoba.in